www.kissekahani.com

नंदन

वर्ष : ५ अंक : १२

सर्वोदय बाल पुस्तकालय
पु० सं० राजेन्द्र अवस्थी
बिजनौर

कहां क्या है ?

मोरारजी देसाई ... ज्ञान-वार्ता २८
शान्ता वर्मा ... खंडहर महल ११
सुरजीत ... मटकी का धन १६
निराला ... राम की शक्ति पूजा १९
शैल तिवारी ... हीरे का बच्चा २२
प्रदीप पन्त ... कोई छोटा नहीं २५
सुप्रिया कपूर ... बुखार ३०
वर्षा दास ... अजनबी संदूक ३५
स्नेहलता ... सुनहरे अक्षर ३७
आराधक ... अपरिचित अपराध ४१
म० ना० नरहरि ... मेलजोल ४२
विष्णु प्रभाकर ... वह आवाज ४४
स्वदेशकुमार ... गमलों में गुलाब ४७

गांधी जन्मशती पर विशेष

मेरी कहानी ... महात्मा गांधी ७
बापू के बोल ... ७
बापू की कहानी ... ३२–३३
बापू के पत्र ... ५२
गांधी : बचपन और बड़प्पन ५३
गांधी ने कहा था ... ६३

काव्य श्रद्धांजलि

बच्चन, वीरेन्द्र मिश्र, उमाकांत मालवीय, राजेन्द्र अनुरागी १०

मुखपृष्ठ : प्रेम कपूर

बापू के बोल

अनुशासन में रहकर ही मनुष्य हर सोचा हुआ काम पूरा कर सकता है।

●

निर्णय लेने से पहले अच्छी तरह विचार करो, किन्तु निर्णय लेने पर उसे बिना झिझक तुरन्त पूरा कर डालो।

●

जो मनुष्य अपने दुखों को गाता है, वह उन्हें चौगुना करता है।

●

आवेग शान्त होने पर जो काम किया जाता है, वही फलदायी होता है।

●

सत्य के साथ उसके पालन की दृढ़ता भी होनी चाहिए।

●

स्वार्थ हमेशा हमें चिन्ताग्रस्त करता है। जितना मनुष्य बोलकर बिगाड़ता है, उतना खामोशी से नहीं।

●

जब तक हम स्वयं की शक्ति को नहीं पहचान पाते,तब तक हम कुछ नहीं कर सकते।

●

जो मनुष्य इर्द-गिर्द के वायुमंडल का गुलाम बना रहता है, वह मंद-बुद्धि है।

●

असहाय मनुष्यों की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है।

●

ज्ञान का सही उपयोग, दूसरों को सही रास्ता दिखाना है।

●

वहम और सत्य साथ नहीं चल सकते।

www.kissekahani.com

मेरी कहानी

मो० क० गांधी

मेरे कुटुम्ब का पैतृक धंधा पंसारी का था, किन्तु मेरे दादा ने अपना धंधा छोड़कर दीवानगिरी की। मेरे पिता कर्मचंद उर्फ काबा गांधी भी कई राजाओं के दरबारों में बड़े-बड़े पदों पर रहे।

मेरे पिता की चार शादियां हुई थीं। मेरी माता जी उनकी चौथी पत्नी थी। मैं अपने भाई-बहन में सबसे छोटा था। मेरे पिता सांसारिक व्यक्ति थे, किन्तु माता जी साध्वी स्त्री थी। पूजा-पाठ के बिना कभी भोजन नहीं करती थीं। उनकी इस धार्मिक वृत्ति का प्रभाव मेरे ऊपर भी पड़ा और धीरे-धीरे मेरे संस्कार भी उसी तरह ढलने लगे। मैं बचपन में अपनी माता जी के साथ राजमहल में भी आया-जाया करता था। वहीं से मेरा व्यवहारिक ज्ञान और सूझ-बूझ बढ़ी। मेरा जन्म १८६९, दो अक्तूबर को पोरबंदर में हुआ था। मेरा बचपना पोरबंदर में ही बीता, किन्तु मेरी शिक्षा का आरंभ राजकोट में हुआ। उस समय मेरी आयु कोई ७ वर्ष

गांधी जी का जन्म हुए सौ वर्ष हो गये, लेकिन उनके बताये सिद्धांत और आदर्श आज भी उतने ही नये हैं, जितने उस समय थे। गांधी जी में कई कमजोरियां थीं, लेकिन आगे चलकर वे उन सबके ऊपर उठे और दुनिया के एक महान व्यक्ति बने। एक साधारण बालक भी एक दिन महान पुरुष बन सकता है, गांधी जी की जीवनी इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। यह अंक उनकी स्मृति में हमारी विनम्र श्रद्धांजलि है। —सम्पादक

की रही होगी। मुझे राजकोट पाठशाला में पढ़ने भेजा गया। पाठशाला में मेरी गिनती साधारण श्रेणी के विद्यार्थियों में ही थी, किन्तु इतना अवश्य है कि मैं अपनी पाठशाला का सीधा, सच्चा और ईमानदार विद्यार्थी समझा जाता था। मुझे याद नहीं कि कभी मैंने किसी शिक्षक से झूठ बोला हो या धोखा दिया हो। हां, यह बात अवश्य है कि पाठशाला में मेरे बहुत कम मित्र थे। इसका कारण यह था कि मैं बहुत ही झेंपू लड़का था। छुट्टी होते ही मैं साथियों में खेलने की बजाय सीधा घर आ जाता था।

मैंने अपने बड़ों का आदर करना सीखा था और मैं बराबर यह ध्यान रखता था कि अजाने में भी कभी किसी का अनादर न हो जाए। मुझे स्कूली किताबों के अलावा और कुछ पढ़ने का शौक नहीं था। मैं पूरी कोशिश करके अपना पाठ याद करने का प्रयत्न करता था, यही कारण था कि मेरे शिक्षक मुझे चाहते थे।

एक बार की बात है, पिता जी की खरीदी हुई एक किताब पर मेरी नजर पड़ी। वह थी 'श्रवण पितृ-भक्ति'। मैं उसे चाव से पढ़ गया। इसका मुझ पर गहरा असर पड़ा। मैंने मन में निश्चय कर लिया कि मैं भी ऐसा ही 'पितृ-भक्त' बनूंगा।

तेरह वर्ष की आयु में मेरा विवाह हो गया था। उस समय यही रिवाज था। मैं शादी-विवाह का अभी तक कोई खास मतलब नहीं समझता था। सिर्फ यही एक खुशी थी कि विवाह के समय अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने को मिलेंगे, धूम-धाम से घोड़े पर चढ़ूंगा और एक नयी लड़की को अपने घर ले आऊंगा। झेंपू स्वभाव का होने के कारण मैं अपनी दुल्हन से बेहद शरमाता था।

विवाह होने के समय मैं हाई स्कूल में पढ़ता था। विवाहित होने के बाद भी मैं बड़ी लगन के साथ अपनी पढ़ाई में लगा रहा। अब तक पढ़ाई में मैंने काफी कुशलता प्राप्त कर ली थी। पांचवे और छठे दर्जे में तो मुझे मासिक छात्र-वृत्ति भी मिली थी।

एक बार मुझे स्कूल में मार भी खानी पड़ी थी। मार का मुझे दुःख नहीं था। दुःख इस बात का था कि मुझसे गलती क्यों हुई?

मुझसे बचपन में अनेक भूलें हुईं, किन्तु मैंने उन्हें तुरन्त सुधार लिया। कुछ भूलें ऐसी भी हुईं, जिनकी सजा मैं जीवन भर भोगता रहा। पता नहीं, कहां से यह गलत ख्याल मेरे दिमाग में घुस गया था कि पढ़ाई में सुन्दर लिखावट की जरूरत नहीं है, जो विलायत जाने तक बना रहा। बाद में और खासकर दक्षिण अफरीका में, जब वकीलों के और दक्षिण अफरीका में पढ़े-लिखे नवयुवकों के मोती के दानों जैसे अक्षर देखे, तब मैं लजाया और पछताया। मैं विचारने लगा कि खराब अक्षर अधूरी शिक्षा की निशानी माने जाने चाहिए।

मेरे बहुत कम मित्र थे। हाई स्कूल में मेरे दो ही मित्र बन सके। इनमें एक से तो कुछ ही दिनों बाद मित्रता टूट गयी। दूसरे से मेरी मित्रता रही, किन्तु उसका मुझे दुःखद परिणाम भोगना पड़ा। इस मित्र ने बहकाकर मुझे मांस खाने पर मजबूर कर दिया। घरवालों से चोरी-छिपे मैंने यह काम कर तो लिया, लेकिन उसके बाद मेरी आत्मा मुझे कचोटती रही। एक तो घरवालों से झूठ बोलने का

गांधी जी मारवाड़ी वेश में परिवार के साथ

दुःख था, दूसरे मुझे मांसाहार खाने योग्य भोजन नहीं लगा। मांसाहार मैंने ताकतवर बनने के लिए किया था किन्तु मुझे लगा कि उसके खाने बाद मैं शारीरिक और मानसिक रूप से दुर्बल हो गया हूं। इसके बाद मैंने अपनी उस बुराई को तुरन्त उतार फेंका और उस मित्र से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया। बचपन में मैंने चोरी भी की और झूठ भी बोला।

हुआ यह कि एक रिश्तेदार की सोहबत में रहकर मुझे सिगरेट पीने का शौक हुआ। पास में पैसे थे नहीं, सिगरेट आती कहां से? सिगरेट का धुआं उड़ाने का मुझे मजा लेना था। हमने चाचा जी के पीकर फेंके हुए सिगरेट के टुकड़े चुराना शुरू कर दिया, पर टुकड़े भी

गांधी जी सरदार पटेल के साथ

हर समय नहीं मिलते थे। अतः जब-तब नौकर की जेब से एक-आध पैसा चुराकर उससे सिगरेट खरीदने लगे। सिगरेट खरीदकर रखें कहां? घरवालों का डर था और मन में यह बात जरूर थी कि यह काम अच्छा नहीं। जब यह बात असह्य हो गयी तो आत्महत्या करने की ठानी, किन्तु आत्महत्या किस ढंग से करें? यह भी समस्या कम नहीं थी। अन्त में बहुत सोच-विचार-कर रामजी के मंदिर में जाकर अपना अपराध भगवान के आगे स्वीकार करने की ठानी।

मैंने भगवान के आगे सच्चे मन से अपना अपराध स्वीकार किया और कभी सिगरेट न पीने की प्रतिज्ञा की। यही नहीं प्रायश्चित के लिए पत्र लिखकर पिता जी के सन्मुख सारा दोष स्वीकार किया और उसका दंड मांगा।

पिता जी पर मन की शुद्धता का प्रभाव पड़ा। और उनकी आंखों से स्नेह के आंसू टपक पड़े।

इसका परिणाम यह हुआ कि मैं मन से शुद्ध हो गया और बुराइयों कि ओर से हटता चला गया। यह सब इसीलिए हुआ कि माता-पिता में मेरी अटूट भक्ति थी और मेरे अन्दर धार्मिक संस्कार फल-फूल रहे थे। मुझे पाठशाला या स्कूल में धर्म-शिक्षा नहीं मिली थी। यह सब माता कि धार्मिक रुचि के कारण ही हुआ। इस के साथ ही मुझे एक बड़ी चीज अपने घर की दाई रंभा से मिली। वह हमारे कुटुंब की पुरानी नौकरानी थी। उसका प्रेम मुझे आज भी याद है। मैं भूत-प्रेत से बहुत डरता था। रंभा ने मुझे बताया कि इसकी दवा रामनाम है। मुझे उस समय रामनाम की अपेक्षा रंभा पर अधिक श्रद्धा थी, इसलिए मैंने बचपन में भूत-प्रेत के भय से बचने के लिए रामनाम का जप आरंभ किया। वह अधिक दिन न चला, पर बचपन में खोया हुआ समय व्यर्थ नहीं गया। आज मेरे लिए रामनाम अमोघ शक्ति है, उसका कारण मैं रंभाबाई के बोये बीज को ही मानता हूं।

इसी बीच मेरे एक चचेरे भाई ने, जो रामायण के भक्त थे, हम दोनों भाइयों के लिए 'रामरक्षास्तोत्र' का पाठ सीखने का प्रबंध कर दिया। हमने उसे कंठ कर लिया और प्रातःकाल स्नान के बाद नित्य पाठक का नियम बना लिया। यह रामायण ही आज मेरे व्यवहार और प्रेम की बुनियाद बनी। मैं तुलसीदास की रामायण को भक्तिमार्ग का सर्वोत्तम ग्रंथ मानता हूं। **(आत्मकथा के कुछ अंश।)** ●

मृत की माला

वे कौन, जाति का तत्व दबाये थे तन में
वे कौन, कौम का सार छिपाये थे मन में
उनके जाते ही देश खोखला लगता है
अब क्यों कोई दुनिया में उससे अनुरागे ।

वे एक गये, सूना-सूना सब देश हुआ
वे एक गये, निस्तेज देश निःशेष हुआ
अब दीप जलाना एक चोचला लगता है
है अंधकार - ही - अंधकार पीछे - आगे ।

भारत के गोशे-गोशे में वे पैठे थे
हर एक क्षेत्र में अगुआ बनकर बैठे थे
वे धैर्य बंधाने वाले भी तो एक रहे
हम हाय एक के ऊपर कितना ऐंठे थे
किससे अब देश अभागा यह धीरज मांगे ।

(बच्चन)

सच्चे इंसान

बच्चो, करो भरोसा वे भी
थे हम से इंसान ।
जिनके कंठ एक हो बैठे
गीता और कुरान ।
हर पग अन्यायों के आगे
बापू सीना ताने ।
लेकिन फिर भी अन्यायी को
क्षमा योग्य ही माने ।
तोपों से जा टकराती थी,
जिनकी मधु मुसकान।
थे जिनके दो हाथ, शक्ति थी
लेकिन साठ करोड़ ।
थे दो पांव, किन्तु देते थे
इतिहासों को मोड़ ।
शान्त मुट्ठियों में थाम थे
जो विराट तूफान ।

– राजेन्द्र अनुरागी –

बोलो कौन ?

बिना दांत का मुंह पप्पू-सा
सूरत जैसे दादी ।
ऐनक आंखों पर बूझो तो
कौन ? महात्मा गांधी ।
नानी जैसी लिये लकुटिया
कछनी बांधे खादी ।
लोहे का तन, मगर सीकिया
कौन ? महात्मा गांधी ।
घड़ी करधनी-सी लटकी है
और पांव में आंधी ।
जुलहा बनकर चरखा काते
कौन ? महात्मा गांधी ।
बुरा कहो और सुना न देखो
इन बातों के आदी ।
तीन बन्दरों को गुरु माना
कौन ? महात्मा गांधी ।

– उमाकांत मालवीय –

दो अक्तूबर के रस्ते

छोटी - छोटी बातों से
जब जग घिर-घिर जाता है,
दो अक्तूबर के रस्ते
बापू फिर-फिर आता है ।

अपनी डफली पर कोई
अपना राग अलाप रहा,
कोई आग लगाता है
कोई बैठा ताप रहा ।
मूर्ति चुराने को कोई
मंदिर-मंदिर जाता है,
ये सब दृश्य देखने को
बापू फिर-फिर आता है ।

सबने झंडा उठा लिया
अपनी-अपनी बोली का,
भाषा गाली बन बैठी
उत्तर लाठी गोली का ।
गले न मिल पायीं गलियां
और बंटा आहाता है,
लगता है ऐसे में ही
बापू फिर-फिर आता है ।

जाति, धर्म के घेरे में
बैर, घृणा ही जनमेंगे,
क्या इंसान रहेंगे वे
जो नफरत में पनपेंगे ।
चमड़ी काली होने से
मन भी क्या गिर जाता है,
प्रश्न यही तो करने को
बापू फिर-फिर आता है ।

गांधी हैं जो कभी न वे
गोली से मरने वाले,
हिंसा के जल्लादों से
कभी न वे डरने वाले ।
डर जाने वाला काफी
पहले ही मर जाता है,
यही सत्य समझाने को
बापू फिर-फिर आता है ।

– वीरेन्द्र मिश्र –

चित्र : चन्द्रकान्ता.

खंडहर महल

—शांता वर्मा—

एक खंडहर महल था। बाहर से देखने में बिलकुल उजाड़, पर भीतर इतना आलीशान कि राजा-महाराजाओं के महल भी शरमा जाएं। उसका बहुत कम लोगों को पता था।

लोग उस खंडहर महल के पास जाने में भी कतराते थे। दिन-रात मौत से जूझने वाले जंगली पहाड़ी लोग भी खंडहर महल के पास जाने में डरते थे। वह महल आसाम के घने जंगलों के बीच बना हुआ था।

इन्हीं जंगलों से लगी हुई सुन्दरपुर नामकी एक बस्ती थी। इस बस्ती में लालचंद्र नामका एक धनवान आदमी रहा करता था। लालचंद्र के एक पुत्र था, जिसका नाम राजू था। लालचंद्र के एक पुत्री थी। वह उसे प्यार से मानू कहकर बुलाया करता था।

लालचंद्र चाहता था कि उसके दोनों बच्चे वीर और साहसी बनें। इसलिए वह उन्हें दुनिया के वीर और साहसी पुरुषों की कहानियां सुनाया करता। उसने उनके लिए एक छोटा-सा नकली टेलिविजन भी खरीद दिया था। राजू और मानू उस टेलिविजन से बहुत प्यार करते थे।

लालचंद्र ने राजू और मानू के लिए दो सुन्दर घोड़े भी खरीद दिये थे। उन्हें घुड़सवारी सिखाने के लिए एक साईस भी रख दिया था। वह उन्हें जंगल से लगे मैदान में घुड़सवारी सिखाया करता।

एक दिन राजू और मानू अकेले घुड़सवारी करने निकल गये। राह में राजू का एक दोस्त मिल गया। वह उससे बातें करने लगा। उधर मानू अकेले ही आगे बढ़ गयी।

बातों में राजू ऐसा खो गया कि उसे किसी बात का ध्यान ही नहीं रहा। अन्त में जब बहुत देर हो गयी तो उसके मित्र ने उससे विदा ली। अब राजू को मानू का ध्यान आया। मानू को पास न पाकर राजू ने समझा वह घर लौट गयी होगी। वह भी घर लौट पड़ा।

घर लौटने पर उसे पता चला कि मानू अभी तक घर नहीं लौटी थी। इतने में लालचंद्र भी घर आ गया। जब उसे मालूम पड़ा कि मानू अभी तक घर नहीं आयी है, तो वह चिंतित हो उठा। फिर भी उसने प्रतीक्षा करना ठीक समझा।

जब पूरी रात भी गुजर गयी और मानू नहीं आयी तो लालचंद्र परेशान हो गया। उसने

फौरन पुलिस को खबर की। उसने पूरे शहर में डुगडुगी भी पिटवा दी कि जो भी मानू को जीवित ढूंढ़ लाएगा, उसे एक लाख रुपयों का इनाम दिया जाएगा। तीन दिन बीत गये। कोई व्यक्ति मानू को ढूंढ़कर न ला सका। अब राजू ने मन-ही-मन एक निश्चय कर लिया। दूसरे दिन सुबह चार बजे वह एक चाकू लेकर घोड़े पर जंगल की तरफ चल दिया।

जंगल में पहुंचते-पहुंचते सुबह हो गयी। थोड़ी दूर पर राजू को एक नदी दिखायी दी। उसका पानी सूर्य की किरणों के प्रकाश में सुनहला-सुनहला चमक रहा था। उसने अपना घोड़ा उधर ही घुमा दिया। अचानक खड़-खड़ की आवाज हुई तो उसने सिर घुमाकर देखा। चार कबीले वाले उसके घोड़े के पास खड़े थे। कबीले वालों को देखकर वह घोड़ा सहम गया। उन लोगों का रंग बिलकुल स्याह था। सिर पर तरह-तरह के पंख लगे हुए थे। कमर के नीचे वे किसी जानवर की खाल का वस्त्र पहने थे।

लालचंद्र ने राजू और मानू को जंगली कबीले वालों की कुछ बोलियां भी सिखा दी थीं। राजू ने एक बोली में उन कबीले वालों से पूछा—"क्या तुमने किसी लड़की को देखा है?"

चारों कबीले वाले राजू को अपनी बोली में बातें करते देख आश्चर्य से भर उठे। उन्होंने कहा—"हमने किसी लड़की को नहीं देखा।" फिर उन्होंने राजू से कहा—"कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम्हारी बहन उस खंडहर महल में चली गयी हो?"

राजू ने चौंककर कहा—"खंडहर महल!"

उन जंगलियों ने बहुत दूर बनी एक टूटी-फूटी इमारत की ओर संकेत करते हुए कहा—"हां, वह इमारत खंडहर महल के नामसे जानी जाती है, पर तुम भूलकर भी उधर मत जाना। वहां जाकर कोई भी वापस नहीं लौटता।"

इतना कहकर कबीले वाले वहां से चले गये। राजू वहीं नदीके किनारे बैठ गया और गहरे सोच में डूब गया।

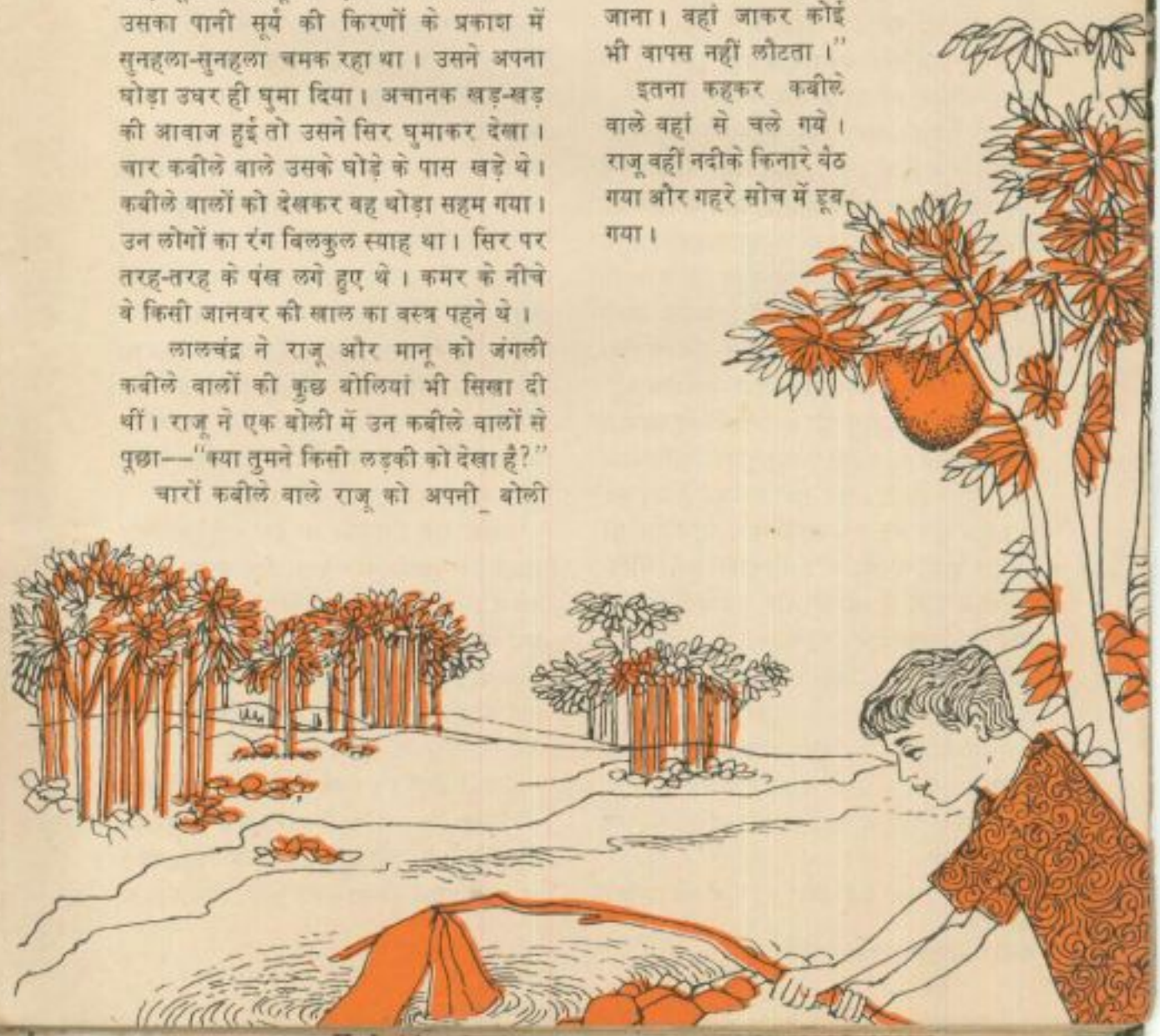

अचानक उसकी दृष्टि नदी के पानी पर पड़ी तो वह चौंक उठा। एक रंगीन कपड़ा पानी में बह रहा था। उसने सोचा, कहीं वह कपड़ा मेरी मानू का दुपट्टा न हो। शायद वह यहां गिर गयी हो। फिर उसने घोड़े पर चढ़कर पेड़ से एक लम्बी मजबूत टहनी तोड़ी और उससे उस कपड़े को खींचने लगा। शीघ्र ही राजू को पता चल गया कि वह कपड़ा मानू का दुपट्टा नहीं है। राजू को राहत मिली, पर अगले क्षण उसके मन में एक प्रश्न उठ खड़ा हुआ, आखिर कपड़ा यहां पर कैसे आया ?

वह इसी सोच-विचार में पड़ा हुआ था कि उसे खंडहर महल की याद आयी।

घोड़े पर सवार होकर वह खंडहर महल की तरफ चल दिया। शाम होने लगी थी। जंगल में पहले से ही अंधेरा होने लगा था। दो-तीन घंटे चलने के बाद अब वह खंडहर महल के पास पहुंच गया। एकाएक उसे बहुत से कुत्तों के भौंकने की आवाजें सुनायी दीं। शायद उसके घोड़े की टापों की आवाज उन्होंने सुन ली थी। वह डरा नहीं। ज्यों-ज्यों घोड़ा नजदीक पहुंचता जाता था, कुत्तों के भौंकने की आवाजें बढ़ती जाती थीं। परन्तु कोई कुत्ता उसे दिखायी नहीं पड़ रहा था। उसे बड़ा ताज्जुब हुआ। जब राजू खंडहर महल के काफी पास पहुंच गया तो उसने देखा, पचास साठ शिकारी कुत्ते मोटी-मोटी जंजीरों से बंधे हैं और कुछ दूरी पर एक बहुत मोटा साधारण-सा आदमी खड़ा है। राजू को देखते ही वह चिल्लाकर बोला—"आइए, राजू साहब ! महल के भीतर चलिए ?"

राजू चौंक उठा। इस व्यक्ति को उसका नाम कैसे मालूम पड़ा ? पर अगले क्षण वह सतर्क हो गया और घोड़े से उतरकर उस व्यक्ति के पास पहुंच गया।

थोड़ी देर बाद वे दोनों महल के भीतर थे। महल की शान-शौकत देखकर राजू दंग रह गया। लगता था, जैसे वह किसी बहुत बड़े देश के राजा का महल हो। यहां-वहां अनेक यंत्र भी लगे थे। एक टेलिविजन भी रखा हुआ था।

राजू इसी सोच-विचार में डूबा हुआ था कि उस मोटे से व्यक्ति ने कहा—"राजू, हम लोग व्यापारी हैं। दूसरे देशों में धन-दौलत और कीमती चीजों का व्यापार करते हैं। इसीलिए हम साहसी लोगों की बड़ी कद्र करते हैं। तुम भी हमारे साथ रहो तो अच्छा रहेगा। अगर हमारे साथ रहकर हमारा काम नहीं करोगे तो..." कहते-कहते वह आदमी रुक गया।

यह बात सुनकर राजू सन्न रह गया। अब रहस्य कुछ-कुछ खुलने लगा था। राजू को उन तस्कर व्यापारियों की कहानियां याद आयीं, जो चोरी-छिपे देश का करोड़ों, अरबों रुपये का माल बाहर ले जाते हैं और बाहर से देश में लाते हैं।

इसी बीच दोनों एक बहुत बड़े हाल में पहुंच गये। वहां भड़कीली पोशाकें पहने बैरे खाना परोस रहे थे। एक बहुत बड़ा डाइनिंग टेबल था और उसके चारों ओर रखी कुरसियों पर लोग बैठे हुए थे। कुछ कुरसियां खाली थीं। उस व्यक्ति ने राजू को एक कुरसी पर बैठने का संकेत किया और स्वयं बाहर चला गया।

खाना शुरू ही हुआ था कि राजू को कुछ आहट-सी सुनायी दी। कुछ लोग बाहर से आ रहे थे। उनके साथ दो लड़कियां थीं। उनमें से एक लड़की को देखते ही राजू चौंक उठा। वह मानू थी। इतने में मानू के साथ आये व्यक्ति ने एक बड़ा-सा बैग खोला तो ढेर सारे हीरे-जवाहरात चमक उठे।

जब वे सब माल देखने में मशगूल थे तो राजू की निगाहें मानू से मिलीं और उसने आंखों ही-आंखों में उसे कुछ बताने की कोशिश की। राजू को देखते ही मानू का चेहरा प्रसन्नता से

खिल उठा। पर राजू की आंखों का संकेत पाकर वह फौरन उदास होने का अभिनय करने लगी।

राजू ने तत्काल एक योजना बना ली और फिर नकली उबासियां लेने लगा।

उसकी नींद भरी आंखें देखकर एक लाल पोशाक वाले आदमी ने कहा—"मेहमान को कमरे में ले जाकर इनकी खातिर करो।"

दो व्यक्ति उसे एक कमरे में ले गये। उस कमरे के बीच में एक बहुत ही सुन्दर पलंग पड़ा हुआ था। कमरे में कोई खिड़की नहीं थी। केवल दो रोशनदान थे। उन दोनों लोगों ने राजू को उस पलंग पर लिटा दिया। उसने भी अपनी आंखें बंद कर लीं। वे दोनों व्यक्ति बाहर चले गये।

बाहर से दरवाजा बंद होने की आवाज आते ही राजू पलंग पर से कूद पड़ा। उसने रोशनदानों तक पहुंचने के लिए चाकू से दीवार पर छोटे-छोटे गड़े बना लिये। फिर उन्हीं छेदों पर पैर रखकर वह रोशनदान तक पहुंच गया। अचानक एक जोर की आवाज हुई और राजू चौंक उठा। उसने देखा कमरे के बीच की जमीन जहां पलंग पड़ा हुआ है, तिरछी होती जा रही है और पलंग भी उलट रहा है। उसने रोशनदान के जंगले को कसकर पकड़ लिया।

राजू ने देखा जमीन के अन्दर एक खोह हो गयी है। उस खोह से कुछ ऐसी तेज आवाज आ रही थी, मानों वहां कोई तेज झरना गिर रहा हो। थोड़ी देर में खोह अपने आप बंद हो गयी। फर्श सीधा हो गया। पलंग भी गढ़े सहित सीधा हो गया। यह सब एक मिनट में ही हो गया। अब राजू की समझ में कबीले वालों की बात आयी कि यहां से कोई क्यों नहीं वापस लौट पाता। नदी में फंसे कपड़े का भी रहस्य उसकी समझ में आ गया कि यहीं से बहकर कोई ...।

अब उसका साहस और भी बढ़ गया था। उसने रोशनदान से झांककर देखा। दूसरी तरफ उसे एक कमरा नजर आया। उसने देखा, कमरे में तीन-चार लड़कियों से घिरी मानू बैठी रो रही है। वह परेशान हो उठा। फिर वह रोशनदान से नीचे उतर आया और दूसरे रोशनदान पर चढ़ने की तैयारी करने लगा। काफी मुश्किल से वह दूसरे रोशनदान तक पहुंच गया। दूसरे रोशनदान से उसने झांका तो दूर उसे आग जलती हुई दिखायी दी। वह समझ गया कि इस रास्ते से बाहर निकल सकता है। रोशनदान की सलाखें लकड़ी की थीं। चाकू से उसने सलाखों को काट लिया और बाहर निकल आया।

अब तो सारा मामला आसान था। राजू जंगल में लुकता-छिपता सुन्दरपुर पहुंच गया। वहां उसने अपने पिता जी से सारी बातें बतलायीं।

लालचन्द्र ने उसी समय अपने शहर के पुलिस-दरोगा से बात की।

कुछ घंटों के भीतर सब खंडहर महल के पास पहुंच गये। पुलिस को देखते ही महल में रहने वाले लोगों ने शिकारी कुत्तों को छोड़ दिया। पर लालचंद ने तुरन्त गुड़ की भेलियां कुत्तों के सामने फिकवा दीं। कुत्ते बड़े चाव से उसे खाने लगे।

यह देखकर बदमाशों ने हथियार डाल दिये। राजू ने अन्दर जाकर मानू और उसके साथ कैद आठ लड़कियों को छुड़ाया। खंडहर महल का राज खुल गया था। इसका सारा श्रेय राजू के साहस को था। ●

www.kissekahani.com

मटकी का धन

—सुरजीत

बहुत दिनों की बात है। किसी गांव में एक किसान रहता था। नाम तो था उसका जगत, लेकिन लोग उसे जग्गू कहकर पुकारते थे। जग्गू के पास दो छोटे-छोटे खेत थे। वह बेचारा दिन-रात परिश्रम करता, तब कहीं जाकर उसे पेट भर खाना प्राप्त होता था। जो फसल होती थी, उसमें कुछ लगान में चली जाती, कुछ गांव का जमींदार हथिया लेता।

जग्गू के कोई संतान नहीं थी। गाय-भैंस रखने की सामर्थ्य भी नहीं थी। केवल पत्नी, एक बकरी और पांच-छः मुरगियां थीं। ये सब इन्हीं दो खेतों पर पलते थे। जग्गू की पत्नी मुरगियों के अंडे बेचकर चार पैसे जमा कर लेती तो कभी-कभी नया कपड़ा भी बन जाता। पिछले वर्ष बकरी ने दो बच्चे दिये थे। उन्हें बेचकर जग्गू ने भी नये कपड़े बनवाये। पत्नी को भी कपड़े बनवा दिये, लेकिन इस वर्ष बड़ी कठिनाई रही। बकरी ने एक बच्चा दिया। वह भी बीमार होकर मर गया। जग्गू की पत्नी दिन भर रोती रही, क्योंकि कुछ दिनों बाद उसके भाई का विवाह था। उसके लिए उसे नये कपड़ों की आवश्यकता थी। जग्गू भी बहुत दुखी था। लेकिन फिर भी पत्नी को सांत्वना देते हुए बोला —"रो-रोकर क्यों प्राण दे रही हो। इससे कपड़े तो नहीं बन जाएंगे। धीरज रखो और ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह हमारे दिन फेर दें।"

यह कहकर जग्गू खेतों की ओर चला गया। उसकी पत्नी का मन दुखी था, इसलिए उसे पति की बात अच्छी लगी। वह तत्काल उठी। नहा-धोकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगी— "हे भगवान्, तेरे घर में क्या कमी है। हमारी दरिद्रता दूर कर दे।"

उसी दोपहर को जब वह जग्गू के लिए खाना लेकर खेत पर गयी तो उसने देखा, उसका पति बहुत खुश है। एक छोटी-सी मटकी उठाये पागलों की तरह नाचे जा रहा है। उसने खिन्न होकर लस्सी का लोटा और रोटियां एक ओर पटकीं और बोली—"मैं कहती हूं, क्या तुम्हारी मति भ्रष्ट हो गयी है! अगर किसी ने देख लिया तो क्या होगा? पास खाने को टुकड़ा नहीं है, पर पागलों के समान नाचे चले जा रहे हो।"

जग्गू ने हंसकर कहा—"भाग्यवान, कौन कहता है, खाने को टुकड़ा नहीं है। देख तो सही, भगवान ने क्या छप्पर फाड़कर धन दिया है। मैंने सोचा था कि बेरी के पेड़ के पास थोड़ी जमीन बरसों से खाली पड़ी है। चलो, इस बार खोदकर धनिया ही लगा दूं, पर खोदने लगा तो फावड़ा

इस मटकी से टकराया। मैंने गहरा गड्ढा खोदकर मटकी निकाली और देखा तो यह अशरफियों से भरी हुई है।"

यह बात सुनकर उसकी पत्नी खुशी से फूली न समायी। अब दोनों को चिन्ता हुई कि यदि जमींदार को पता चल गया तो सब कुछ छिन जाएगा, इसलिए उन्होंने गांव छोड़कर नगर में बसने का निश्चय किया। यह सलाह कर दोनों हंसी-खुशी घर वापस आये। रात भर उन्हें नींद नहीं आयी। वे रात भर अशरफियों को बार-बार गिनते रहे। अगले दिन उन्होंने सब सामान समेटकर गठरी बनायी। जग्गू ने उसे अपने सिर पर रखा। अपनी कोठरी और दोनों खेत अपने मित्र नन्दू के सुपुर्द किये और पति-पत्नी नगर की ओर चल दिये।

नगर में पहुंचकर जग्गू ने अच्छे-से कपड़े बनवाये। एक सुन्दर मकान किराये पर लिया। कुछ समय बाद उसने अपनी बड़ी-सी कोठी बनवायी और ठाट के साथ रहने लगा। मटकी में से अशरफियों की दो मुट्ठियां खर्च के लिए निकालकर शेष आंगन में चूल्हे के नीचे दबा दीं।

अब लोग उसे चौधरी जगतराम कहते थे और उसकी पत्नी को चौधराइन। लेकिन अब उसकी पत्नी बहुत अभिमानी हो गयी थी। किसी से सीधे मुंह बात ही न करती थी। पड़ोसियों से भी अच्छा व्यवहार न करती थी। वह इतनी कंजूस हो गयी थी कि किसी को एक पैसा भी न देती थी।

एक रात जगतराम के पास उसका एक गरीब पड़ोसी आया। वह गिड़गिड़ाकर कहने लगा—"भाई, मैं इस समय भारी संकट में हूं। मुझे एक व्यापारी को पचास अशरफियां देनी हैं। परिस्थितियां ऐसी आ गयीं कि मैं समय पर ऋण चुका नहीं सका। यदि सुबह तक मैंने ऋण न चुकाया तो वह मुझे कारागार में भिजवा

देगा। कारागार में जाने से मेरे बीवी-बच्चे मुसीबत में फंस जाएंगे। भगवान के लिए इस समय मेरी सहायता करो।"

चौधरी जगतराम को उस पर बड़ी दया आयी। उसने उसे सांत्वना दी और सहायता करने का वचन दिया, लेकिन वह मन-ही-मन परेशान था कि उसकी पत्नी तो फूटी कौड़ी भी किसी को नहीं देती, पचास अशरफियां कैसे देगी? पर फिर यह सोचकर कि शायद उसे दया आ जाए, डरते-डरते उसने उसे सारी बात बतायी। वह बोला—"भाग्यवान, यदि इतनी ढेर-सी अशरफियों में से पचास दे दोगी तो क्या अन्तर आ जाएगा।" यह बात सुननी थी कि चौधराइन ने चिल्लाना शुरू कर दिया—"खबरदार, जो अशरफियों का नाम लिया। मैं इतनी मूर्ख नहीं कि यूं अशरफियां बांटकर स्वयं कंगाल हो जाऊं। अब तुम्हारा क्या विश्वास कहीं चुपके से निकालकर दे न दो। इसलिए अब सुबह मैं सारी अशरफियां चूल्हे से निकालकर कहीं और दबा दूंगी।"

दीवारों के भी कान होते हैं। संयोगवश उस समय कोई दीवार के साथ खड़ा यह बातें सुन

रहा था। उसने अशरफियों का नाम सुना तो चुपके से चूल्हा खोदकर मटकी निकाली और हवा हो गया।

सुबह जब चौधराइन चूल्हे को जलाने लगी तो चूल्हा खुदा हुआ देखकर उसके होश उड़ गये। देखा तो मटकी गायब थी। उसने अपना सिर पीट लिया। और चीख-चीखकर आसमान सिर पर उठा दिया, पर अब क्या हो सकता था। शोर सुनकर पड़ोसी भी आ गये। जो सुनता, यही कहता कि चौधराइन को अपनी कंजूसी का दंड मिल गया है। ऐसी बातें सुनकर वह और कुढ़ती और उलटे पड़ोसियों को गालियां देती, लेकिन सब कुछ खोकर भी उसका स्वभाव न बदला।

चौधरी के पड़ोस में एक भठियारा रहता था। उसने दीवार के साथ घास-फूंस जमाकर रखा था। एक दिन हवा चली तो कोई चिनगारी घास में जा गिरी और घास में आग लग गयी। हवा तेज थी। आग भड़कती गयी और चौधरी का मकान आग की लपेट में आ गया। दोनों ने बड़ी मुश्किल से अपने प्राण बचाये। पास-पड़ोस में किसी से मित्रता तो नहीं थी, इसलिए कोई सहानुभूति प्रकट करने भी न आया। सब जलकर खाक हो गया। अब विवश होकर रोते-पीटते वापस अपने गांव आये।

नन्दू ने उनकी कोठरी और खेत उन्हें दे दिये। चौधरी जगतराम फिर जग्गू हो गया था। वह खेतों पर हल चलाने लगा। उसकी पत्नी भी मेहनत मजदूरी करने लगी। अब वह दिन-रात अपने किये पर पछताती थी। जब भी अवकाश मिलता तो नगर जाने वाली पगडंडी पर जा बैठती थी और आते-जाते यात्रियों से कहती —'देखो, अभिमान बहुत बुरी बलाय है। जहां कहीं भी जा रहे हो, वहां पहुंचकर अभिमान न करना, नहीं तो मेरी भांति पछताओगे।" ●

राम और रावण की सेना का आज का युद्ध सबसे भयंकर था। वैसे तो लड़ाई कई दिनों से हो रही थी, पर आज जैसी लड़ाई कभी नहीं हुई थी। आज के युद्ध में दोनों ओर की सेनाएं एक-दूसरे को हराने के लिए जी-जान से लड़ रही थीं। युद्धभूमि में चारों ओर मार-काट मची हुई थी। एक ओर राम के चुने हुए सैनिक थे और दूसरी ओर राक्षसों की विशाल शक्तिशाली सेना। राम के साथ सुग्रीव, जाम्बवान, नल, नील, गवाक्ष और हनुमान जैसे सेनापति थे तो रावण के साथ मेघनाथ, कुंभकरण और दूसरे प्रसिद्ध योद्धा थे। जब शाम हुई और लड़ाई बंद हुई तो राम को लगा कि रावण की सेना उनसे अधिक शक्तिशाली है।

राम की शक्ति पूजा

—लेखक: महाकवि निराला

—प्रस्तुत : श्रीप्रसाद

लड़ाई समाप्त करके दोनों सेनाएं अपने-अपने शिविरों को लौट रही थीं। राम की सेना का शिविर पर्वत की चोटी पर था। लौटती हुई सेनाओं में एक विजय का अनुभव कर रही थी, दूसरी पराजय का। विजय का अनुभव करने वाली रावण की सेना थी।

इधर राम की सेना के सैनिकों में न उल्लास था, न उत्साह। थकान और दुःख का अनुभव करते हुए राम अपनी सेना के साथ पर्वत की चोटी पर आ गये। शिविर में आते ही सेनापति राम के पास आकर इकट्ठे हो गये।

राम धवल चट्टान पर बैठ गये। हनुमान थके हुए राम के हाथ-पैर धोने के लिए जल ले आये। सारे सेनापति विचारमग्न बैठे थे। सब इस प्रतीक्षा में थे कि राम मंत्रणा आरंभ करें, पर राम तो बिलकुल मौन थे।

महर्षि वाल्मीकि रामायण लिखने में व्यस्त

राम वाणी से मौन अवश्य थे, किन्तु उनके मन में अनेक विचार चल रहे थे। वे सोच रहे थे — 'आज मेरी शक्ति कितनी कम हो गयी है। एक समय था, जब मैंने शंकर के उस धनुष को उठाकर तोड़ दिया था, जिसको रावण उठा भी नहीं सका था। आज उसी रावण के आगे मैं पराजय का अनुभव कर रहा हूं।'

राम मन में सोचते जा रहे थे और दुखी होते जा रहे थे—'अब सीता को रावण के चंगुल से कैसे छुड़ाया जा सकेगा?' यह सोचते-सोचते राम गहरे विचार में डूब गये। सभी लोग चिन्तित राम को देखकर उदास हो गये।

राम को दुखी देखकर विभीषण ने कहा—"रघुवीर, आज आप इतने दुखी क्यों हैं? किसलिए आपको निराशा का अनुभव हो रहा है? आपकी सेना में सभी वीर और बलवान हैं। लक्ष्मण, अंगद, जाम्बवान, सुग्रीव और पवनसुत आदि सब ऐसे वीर हैं, जिनके रहते आपकी हार हो ही नहीं सकती।"

विभीषण की बातें सुनकर थोड़ी देर राम चुप रहे फिर राम बोले—"मित्र, युद्ध में मेरी विजय असंभव है। वास्तव में यह युद्ध मेरा

राम-लक्ष्मण धनुष-यज्ञ में

ये चित्र हैं—'सुनो कथा श्रीराम की' नामक नृत्य-नाटिका के। रामायण की इस लोकप्रिय कथा को चल-चित्र द्वारा जूनियर माडल स्कूल के पांच से आठ वर्ष के बच्चों ने प्रस्तुत किया है। यह काम कम कठिन नहीं है। यह लघु चल-चित्र५० मिनट में प्रभावशाली ढंग से रामकथा दर्शाता है। इसे प्रस्तुत किया है एस० एल० आहलुवालिया ने और निर्देशक हैं ब्रजभूषण।

मंथरा रानी कैकयी के कान भरती हुई

रावण के साथ नहीं है। यह ऐसा युद्ध है, जिसमें स्वयं दुर्गा रावण को शक्ति प्रदान कर रही हैं। मुझे इस बात का दुःख है कि अन्यायी रावण का दुर्गा साथ दे रही हैं। उन्हें ऐसे रावण का साथ नहीं देना चाहिए था, जो देवताओं और महात्माओं को कष्ट देता रहता है। जिसने बिना किसी अपराध के असहाय अवस्था में सीता का हरण किया है।"

राम यह कहते-कहते अगाध दुःख में डूब गये। उन्हें युद्ध का वह दृश्य दिखायी देने लगा, जब उन्होंने रावण पर अनेक बाण छोड़े और वे सब

राम नववधू सीता के साथ अपने माता-पिता से मिल रहे हैं

बेकार चले गये।

सारी सभा चुप थी। राम को दुखी देखकर जाम्बवान कहने लगे—"दशरथ-नंदन, यदि ऐसी बात है तो आप भी दुर्गा को अपने पक्ष में करिए। रावण उपासना करके दुर्गा को अपने पक्ष में सकता है, तो आप क्यों नहीं कर सकते?"

जाम्बवान की राय सबको पसंद आ गयी। राम ने दुर्गा की उपासना करने का निश्चय किया। दुर्गा पर चढ़ाने के लिए एक सौ आठ कमल लाने का आदेश हनुमान को दे दिया गया।

दूसरे दिन युद्ध की व्यवस्था लक्ष्मण ने संभाली और राम ने दुर्गा की उपासना करने का निश्चय किया।

राम उपासना करने लगे। दुर्गा सम्बंधी मंत्रों का जाप करते हुए और दुर्गा की प्रतिमा के चरणों में कमल चढ़ाते हुए वे अपनी उपासना में लीन होने लगे। उपासना का आठवां दिन पूरा हो गया। करते-करते जप समाप्त होने को ही था। कमल भी एक ही रह गया था, तभी दुर्गा छिपकर आयीं और उस अंतिम कमल को उठाकर ले गयीं।

अंतिम जप के साथ जब कमल लेने के लिए राम ने हाथ बढ़ाया तो सन्न रह गये। उनका ध्यान टूट गया। आंखें खोलकर उन्होंने देखा, कमल वहां नहीं था। अब क्या करें? राम दुखी हो उठे। आठ दिनों की उपासना बेकार। अब न दुर्गा प्रसन्न होंगी, न रावण हारेगा और न सीता की ही मुक्ति हो सकेगी।

तभी राम को बचपन की एक बात याद आ गयी। उनकी मां कौशिल्या उन्हें कमलनेत्र कहा करती थीं। जब उनके नेत्र कमल जैसे हैं, तो अभी तो उनके पास दो-दो कमल हैं।

मन में यह विचार आते ही उन्होंने बांए हाथ में बाण लिया। दाहिने हाथ से दाहिनी आंख पकड़कर जैसे ही बाण से आंख निकालने को तैयार हुए कि दुर्गा प्रकट हो गयीं। दुर्गा राम की परीक्षा लेने के लिए ही अंतिम कमल उठाकर ले गयी थीं। वे राम के इस महान त्याग को देखकर प्रसन्न हो गयीं।

राम ने सिंह पर सवार दुर्गा को देखकर वंदना की। दुर्गा ने राम को विजय का आशीर्वाद दिया और अंतर्ध्यान हो गयीं। युद्ध में राम की विजय हुई। लगन से किया गया कोई भी काम असफल नहीं होता। ●

चित्र: चन्द्रकान्ता

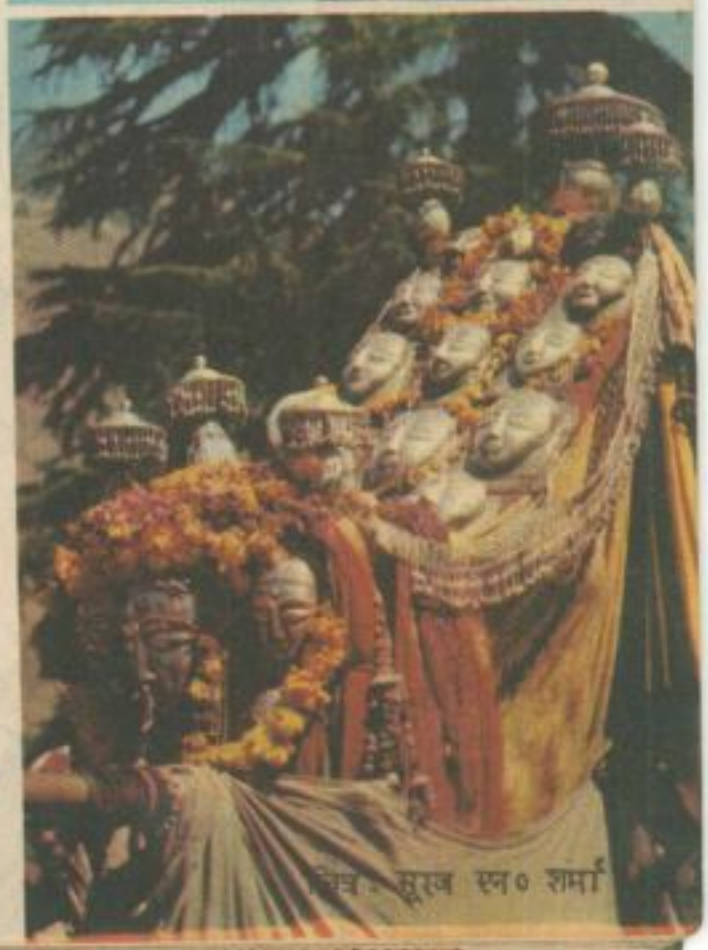

चित्र: सूरज एन० शर्मा

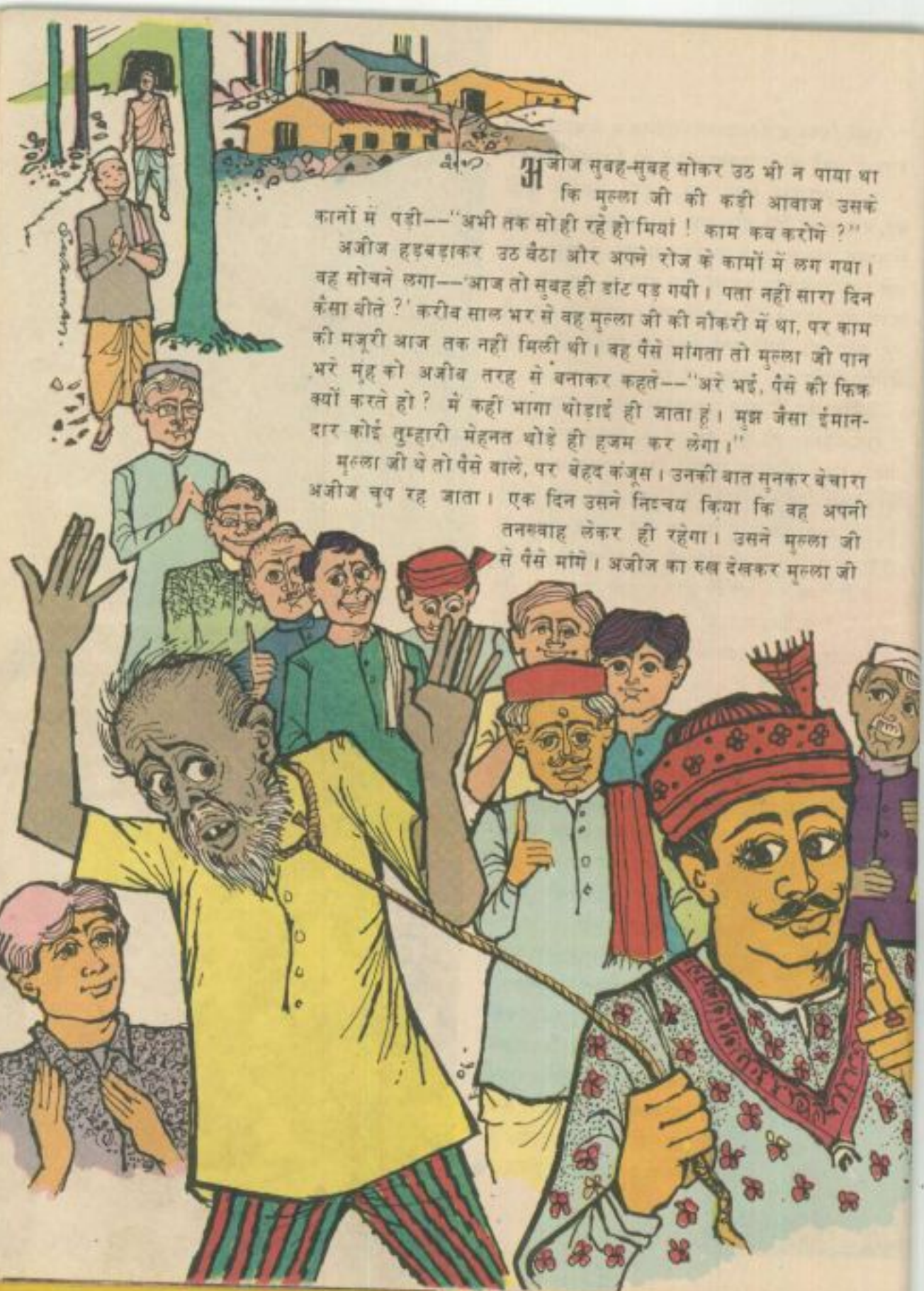

अजीज सुबह-सुबह सोकर उठ भी न पाया था कि मुल्ला जी की कड़ी आवाज उसके कानों में पड़ी—"अभी तक सो ही रहे हो मियां ! काम कब करोगे ?"

अजीज हड़बड़ाकर उठ बैठा और अपने रोज के कामों में लग गया। वह सोचने लगा—'आज तो सुबह ही डांट पड़ गयी। पता नहीं सारा दिन कैसा बीते ?' करीब साल भर से वह मुल्ला जी की नौकरी में था, पर काम की मजूरी आज तक नहीं मिली थी। वह पैसे मांगता तो मुल्ला जी पान भरे मुंह को अजीब तरह से बनाकर कहते—"अरे भई, पैसे की फिक्र क्यों करते हो ? मैं कहीं भागा थोड़ाई ही जाता हूं। मुझ जैसा ईमानदार कोई तुम्हारी मेहनत थोड़े ही हजम कर लेगा।"

मुल्ला जी थे तो पैसे वाले, पर बेहद कंजूस। उनकी बात सुनकर बेचारा अजीज चुप रह जाता। एक दिन उसने निश्चय किया कि वह अपनी तनख्वाह लेकर ही रहेगा। उसने मुल्ला जी से पैसे मांगे। अजीज का रुख देखकर मुल्ला जी

भी समझ गये कि आज यह मानने वाला नहीं है। उन्होंने तुरन्त पैंतरा बदला और चेहरे पर नरमी उगाते हुए बोले—"तुम्हारा हिसाब अभी चुकता किये देता हूं। मुट्ठी खोलो और यह लो हिसाब।" इतना कहकर मुल्ला जी ने उसकी मुट्ठी में एक कद्दू का बीज रख दिया।

बेचारा अजीज हैरान होकर मुल्ला जी की ओर देखने लगा। वे बोले—"लगता है, तुम मेरे तोहफे की कदर नहीं कर पाये! अरे, भई, फसल पर इसे बोना और फिर देखना, एक अकेले

हीरे का बच्चा

—शैल तिवारी

बीज से तुम्हें लगभग सौ कद्दू मिलेंगे। फिर दोबारा बसन्त में बोना। फिर तो बस कद्दू-ही-कद्दू हो जाएंगे। उन्हें आराम से बेचना। इतना रुपया मिलेगा, इतना मिलेगा कि तुम आसपास के इलाके के रईसों में गिने जाने लगोगे। क्यों, अब जंचा तोहफा?"

अजीज यह सुनकर गुस्से से लाल-पीला हो गया, पर कहता क्या! अपने घर आकर उसने बीज तो आंगन के एक किनारे बो दिया और फिर रोजगार की बात सोचने लगा। कुछ महीने बाद फसल पर सचमुच एक बड़ा कद्दू निकला। वह तुरन्त उसे लेकर बाजार में बेचने चल दिया।

वह कुछ ही दूर चला होगा कि उसकी भेंट एक जमींदार से हो गयी। जमींदार ने उससे पूछा—"क्यों, मियां! कहां जा रहे हो?"

"बाजार तक जा रहा था।"—अजीज बोला।

"अच्छा, अच्छा, कुछ बेचने। मगर बेचोगे क्या?" —जमींदार ने पूछा।

यह सुनकर अजीज ने सोचा—'यह निरा बुद्धू है। मेरे पास कद्दू देखकर भी इसे समझ नहीं आयी। तुरन्त ही उसके दिमाग में एक बात आयी, क्यों न इस बुद्धू की ही जेब ढीली की जाए। वह बोला—"हुजूर, मेरे वालिद के पास हीरा नामका एक ऐसा घोड़ा है, जो उड़कर बादलों तक की सैर करा लाता है। उसी जादुई घोड़े का एक अंडा बेचने मैं बाजार जा रहा हूं। यह अंडा एक-दो दिन में ही फूटेगा। उसके फूटने पर हीरे का बच्चा निकल आएगा।"

जमींदार उड़ने वाले घोड़े की बात सुनकर ललचा गया। वह अजीज से उस अंडे को खरीदने की बात करने लगा। अजीज ने दूकानदारी की चाल चलते हुए कहा—"मैं बेचने से तो इंकार नहीं करता, पर क्या आपके पास इतने रुपये होंगे? बाजार में मुझे इसके करीब सौ रुपये मिलते, आपको पचास रुपये में दे दूंगा।"

जमींदार ने खुशी-खुशी अंडा खरीदकर उसे सावधानी से अपने घोड़े पर रख लिया।

जमींदार आहिस्ता-आहिस्ता अपने घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में एक ऊंची पहाड़ी चढ़कर जाना पड़ता था। जमींदार का घोड़ा पहाड़ी से उतरने लगा, तो किसी तरह फिसल-कर कद्दू नीचे आ गिरा और लुढ़कते-लुढ़कते अन्त में एक पेड़ से टकराकर फूट गया।

उसी पेड़ के नीचे एक घोड़े का बच्चा खड़ा था। कद्दू फटने की आवाज से वह चौंका और तेजी से भागने लगा। जमींदार उसे देखकर समझा कि अंडा फूटकर ही यह बच्चा निकला

है। वह उस घोड़े का पीछा करने लगा—"अरे, हीरे के बच्चे ! रुक जा।" काफी दौड़-धूप करने पर भी घोड़े का बच्चा उसके हाथ नहीं आया।

वह दुखी होकर घर लौटा और आते ही अपनी बीबी से सारा किस्सा कह सुनाया। बीबी भी यह सुनकर दुखी हुई, क्योंकि वह सोचने लगी, अगर उनके पास हीरे का बच्चा आ गया होता तो वे आसपास के जमींदारों में अपनी धाक जमा लेते। सुबह होने पर जमींदार फिर 'हीरे के बच्चे' को खोजने निकला। अचानक उसे मुल्ला जी की याद आयी। उसने मुल्ला जी से सलाह लेने की सोची।

उसी रात अजीज ने भी अपनी बीबी को कद्दू बेचने का सारा किस्सा बता दिया था। अजीज की बीबी अपनी सहेलियों से सारा किस्सा बता आयी। एक पड़ोसी ने दूसरे पड़ोसी और दूसरे से तीसरे से, इसी तरह बात फैलती-फैलती मुल्ला जी के कान तक जा पहुंची।

मुल्ला जी ने फौरन अजीज को बुलाया और बोले—"शाबाश बेटे, शाबाश! मुझे तो सुनकर बेहद खुशी हुई कि कद्दू तुमने इतने अच्छे दामों में बेचा। पर भई,मेरा हिस्सा ?"

अजीज बोला—"मैं समझा नहीं। बीज तो आपने मुझे मेरी मेहनत के बदले में दिया था।"

मुल्ला जी दाढ़ी पर हाथ फिराते हुए बोले—"भई, वह तो तुम सही कह रहे हो, पर मैं बीज के दाम थोड़े ही मांग रहा हूं। मैं तो अपनी उस जमीन का किराया मांग रहा हूं, जहां तुमने कद्दू का बीज उगाया था। बोलो, अब तो आधा हिस्सा हो गया न मेरा ?"

अजीज यह सुनकर चुप। वह मुल्ला जी से लड़ाई भी तो मोल नहीं ले सकता था। चुपचाप उनके सामने पचीस रुपये रख दिये और बड़बड़ाता बाहर आ गया।

अजीज मुल्ला जी के घर से बाहर आया ही था कि उसे जमींदार आता हुआ दिखायी दिया। जमींदार घबराहट में अजीज को ही मुल्ला समझ बैठा। वह हाथ जोड़कर बोला—"मुल्ला जी, कल मैंने आपके आदमी से हीरा नामके उड़ने वाले घोड़े का एक अंडा खरीदा था। मुझसे वह रास्ते में ही गिर गया। उसमें से एक बच्चा निकला। वह इतनी तेजी से भागा कि मैं अपनी सारी ताकत लगाकर भी उसे पकड़ नहीं पाया। वह अभी भी ढूंढ़े नहीं मिला है।"

अजीज ने यह सुना तो तुरन्त उसने मन-ही-मन कुछ सोचा और बोला—"आप निराश न हों। वह बच्चा इसी घर के अन्दर है। थोड़ा रूप-रंग उसका रात भर में बदल गया है। अब वह कुछ-कुछ आदमी की शक्ल का हो गया है। उसके लाल-लाल-सी दाढ़ी भी निकल आयी है। आप बिना झिझक अन्दर जाकर उसे पकड़ लें। और मेरी सलाह की फीस मुझे दे दें।" जमींदार मूर्ख तो था ही उसने जेब से निकालकर पच्चीस रुपये अजीज के हवाले किये और क्रोध से नथुने फुलाता हुआ मुल्ला जी के घर में घुस गया। मुल्ला जी सामने बैठे पान चबा रहे थे। जमींदार ने आव देखा, न ताव फौरन मुल्ला जी के गले में रस्सी फांस दी और चिल्लाकर बोला—"ओ, हीरे के बच्चे ! सारा जंगल खोज डाला, पर तेरा पता नहीं चला। तू यहां मौज से बैठा पान चर रहा है। देख, तेरी कैसी मरम्मत करता हूं।" बेचारे मुल्ला जी कुछ कहते, इससे पहले ही जमींदार चाबुक चलाने लगा। वह उन्हें घसीटकर बाहर ले लाया।

गांव के सारे लोग मुल्ला जी की दुर्दशा देखकर हंसने लगे। वे उसकी बेइमानी से तंग आ चुके थे। किसी ने उसकी सहायता न की। गांव वालों को हंसता देखकर मुल्ला जी की आंखों में आंसू आ गये। दूसरों को परेशान करने का यही फल मिला करता है। ●

एक था राजकुमार। वह चाहता था कि किसी बहुत रूपवती राजकुमारी से शादी करे और सुख से रहे।

एक दिन सबेरे-सबेरे वह अपने विशाल महल के बगीचे में टहल रहा था। टहलते-टहलते थोड़ा थक गया तो हरी घास पर रखी आराम कुरसी पर बैठ गया। यह आराम कुरसी विशेष प्रकार की थी और केवल राजकुमार के लिए ही बनवायी गयी थी। कुरसी की विशेषता यह थी कि उस पर बैठते ही थकान दूर हो जाती और आंखें लग जातीं।

www.kissekahani.com

कोई छोटा नहीं

—प्रदीप पन्त

सबेरे की सुहानी हवा और आरामदेह कुरसी! राजकुमार की पलकें तुरन्त बंद हो गयीं। लेकिन अभी पलकें बंद किये उसे थोड़ी ही देर हुई थी कि वह चौंककर उठ पड़ा। उसे महसूस हुआ कि नाक में जैसे किसी ने सूई चुभो दी हो। उसने नाक पर हाथ लगाया तो उसे लगा कि उड़ने वाला कोई कीड़ा काटकर भाग गया है। राजकुमार ने इधर-उधर देखा, पर कोई नजर नहीं आया। देखते-देखते उसकी नाक फूल गयी।

राजकुमार के सुन्दर चेहरे पर फूली हुई नाक बड़ी अजीब-सी लग रही थी। वैसे राजकुमार बड़ा हंसमुख था, लेकिन उसे उस कीड़े पर बड़ा गुस्सा आया। उसने अपने मंत्री को बुलवाया और सारी बात बताते हुए कहा—"देश भर के उड़ने वाले सभी कीड़ों, मक्खियों और मधुमक्खियों को पकड़वाकर तुरन्त मेरे सामने लाओ।"

फिर क्या था! मंत्री ने तुरन्त राजकुमार के आदेश का पालन किया। देखते-देखते देश भर की मक्खियों, मधुमक्खियों और उड़ने वाले अन्य कीड़ों को पकड़कर लाया गया।

राजकुमार ने इन सब कीड़े-मकोड़ों को डांटते हुए पूछा—"यह किसकी हरकत है? सच-सच बताओ, नहीं तो सभी को मौत के घाट उतार दिया जाएगा।"

कीड़े-मकोड़े घबराये। सब एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे। हरेक को लगा कि अब मौत निकट है, क्योंकि राजकुमार की नाक पर काटने वाले का पता न चला तो सभी को मृत्यु दण्ड दे दिया जाएगा। सभी चिंतित थे। तभी भिनभिनाती हुई एक नन्ही-सी मधुमक्खी राजकुमार के सामने आयी। उसने झुककर राजकुमार के

प्रति आदर भाव व्यक्त किया और फिर कहा —"राजकुमार, यह गलती मेरी है।"

राजकुमार ने गुस्से से कहा—"तुम्हें मौत की सजा दी जाएगी। तुम्हारी यह हिम्मत!"

नन्ही मधुमक्खी ने बड़े आदरपूर्वक कहा—"राजकुमार, इस भारी गलती के लिए मुझे बड़ा दुःख है। मैं हाल ही में जनमी हूं। मुझे अभी इतनी समझ नहीं है कि फूल, सेब और मनुष्य की नाक के बीच अन्तर कर सकूं। आपका चेहरा सुर्ख लाल है और नाक सेब की तरह। मैं उसे सेब समझकर तुरन्त उस पर लपक पड़ी, लेकिन जैसे ही मुझे पता चला कि वह सेब नहीं कुछ और है, आपके शरीर का कोई हिस्सा है। मैं डर के मारे फौरन भाग गयी।"

नन्ही मधुमक्खी ने नाक की तुलना सेब से की तो राजकुमार को गुस्से के बावजूद हंसी आ गयी।

नन्ही मधुमक्खी ने राजकुमार की हंसी का तुरन्त फायदा उठाया और अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा—"लोग कहते हैं कि आप बड़ी-बड़ी गलतियां माफ कर देते हैं। मेरी गलती भी कोई छोटी-मोटी नहीं है, लेकिन यदि आप मुझे इस बार माफ कर दें, तो मैं फिर दोबारा ऐसी गलती कभी नहीं करूंगी। मैं आपका उपकार भी कभी नहीं भूलूंगी। फिर क्या पता, मैं कभी आपके काम ही आ जाऊं।"

राजकुमार को बित्ते भर की उस मधुमक्खी की बात पर फिर हंसी आ गयी। उसने कहा—"तुम अपनी मदद अपने आप कर लो, यही बड़ी बात है। भला, हमारे क्या काम आओगी! हम तुम्हें क्षमा-दान देते हैं। अब दोबारा ऐसी गलती कभी न हो।"

नन्ही मधुमक्खी और अन्य मधुमक्खियों के साथ भिनभिनाती हुई उड़ गयी। सभी कीड़े-मकोड़े, मधुमक्खियां और मक्खियां खैर मना रही थीं कि चलो जान बची, नहीं तो एक-एक को मौत के घाट उतार दिया जाता। लेकिन नन्ही मधुमक्खी के दिल में राजकुमार की बात लग गयी। उसने मन-ही-मन निश्चय किया कि कभी राजकुमार को दिखा दूंगी कि मैं बित्ते भर की मधुमक्खी किस प्रकार राजकुमार के काम आ सकती हूं!

राजकुमार की नाक धीरे-धीरे ठीक हो गयी। अब वह फिर पहले जैसा प्रसन्न रहने लगा। अचानक एक दिन शिकार के दौरान उसने पड़ोसी देश की राजकुमारी को देख लिया। वह उस पर रीझ उठा। उसने उसे अपने देश की यात्रा का निमंत्रण दिया। राजकुमारी फौरन राजी हो गयी और फिर कुछ दिन बाद वह सज-संवरकर राजकुमार के देश आयी। राजकुमार ने

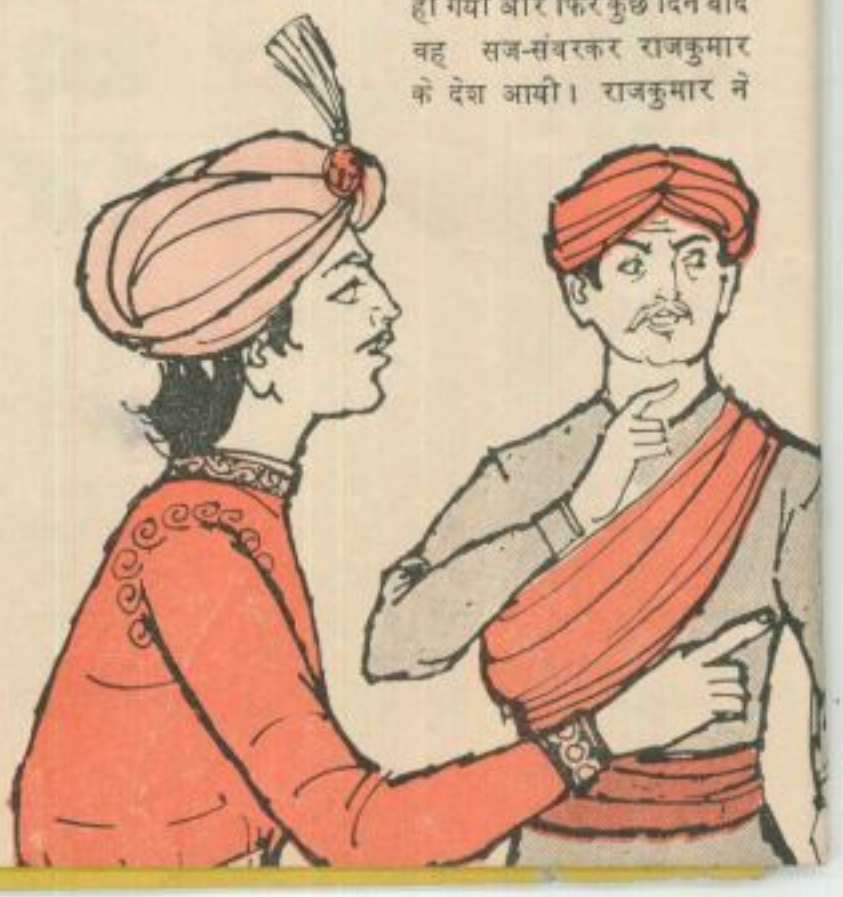

उसे अपने महल में ही ठहराया। उसे लगा कि यह राजकुमारी हमेशा के लिए इस महल में रहने लगे, तो महल की शोभा में चार-चांद लग जाएं। बस, फिर क्या था! राजकुमार ने तुरन्त राजकुमारी से अपने दिल की बात कह दी।

राजकुमारी को पहले से ही इस बात का अनुमान हो गया था। उसने राजकुमार से कहा —"यदि आप मेरे एक प्रश्न का सही-सही उत्तर दे दें तो मैं आपसे अवश्य शादी कर लूंगी।"

राजकुमार ने आतुरता से प्रश्न पूछा तो राजकुमारी ने उत्तर दिया—"शर्त बहुत आसान है।" फिर उसने साथ लायी एक टोकरी से बड़े जतन से रखे हुए गुलाब के दो फूल निकाले। फूल एकदम लाल थे और बड़े सुन्दर दिखायी पड़ते थे। राजकुमारी ने दोनों फूल एक हाथ में लिये और फिर चार कदम पीछे से ही राजकुमार को फूल दिखाते हुए उसने कहा—"अब दूर खड़े रहकर ही बतलाइए कि इन गुलाबों में से कौन-सा असली गुलाब है? बस, केवल इतनी-सी ही शर्त है।"

राजकुमार परेशान हो गया। वह आगे नहीं बढ़ सकता था। वह जहां खड़ा था, वहीं से उसे बताना था कि असली गुलाब कौन है? परेशान-सा वह इधर-उधर देखने लगा। तभी उसकी नजर कमरे की खिड़की पर गयी, जिसके बाहर उसका सुन्दर-सा बगीचा था। खिड़की पर एक मधुमक्खी भिनभिना रही थी।

एकाएक राजकुमार चौंक उठा। फिर उसने पास खड़े अपने मंत्री को तुरन्त खिड़की खोलने का आदेश दिया। मंत्री ने फौरन आदेश का पालन किया और लपककर खिड़की खोल दी। खिड़की का खुलना था कि एक मधुमक्खी भिन-भिनाती हुई कमरे में आ गयी। लेकिन राज-कुमारी कुछ न समझ सकी। राजकुमारी ही नहीं, मंत्री भी कुछ न समझ सका। असल में राजकुमारी और मंत्री में से किसी का ध्यान उस नन्ही मधुमक्खी की ओर नहीं गया।

नन्ही मधुमक्खी कुछ देर कमरे में भिन-भिनाती रही। उधर राजकुमारी, राजकुमार को असफल होता देखकर मुसकरा रही थी। तभी भिनभिनाती हुई नन्ही मधुमक्खी राजकुमारी के हाथ के दाएं गुलाब पर जा बैठी। वह कुछ देर चुपचाप गुलाब पर बैठी रही और फिर उड़ती हुई खिड़की के रास्ते बगीचे की ओर चली गयी।

राजकुमार के लिए इतना ही संकेत काफी था। उसने फौरन राजकुमारी के दाएं गुलाब की ओर संकेत करते हुए कहा—"यह रहा असली गुलाब!" उसे पता था, मधुमक्खी असली गुलाब पर ही बैठती है।

राजकुमार से सही उत्तर पाकर राजकुमारी ने विवाह का प्रस्ताव तुरन्त स्वीकार कर लिया।

कुछ दिन बाद दोनों का विवाह हो गया। अब राजकुमार किसी को भी छोटा न मानता। उसे मालूम हो गया था कि कोई प्राणी छोटा नहीं होता। हम जिसे छोटा समझते हैं, वह मौके पर बड़ी-से-बड़ी सहायता कर सकता है। ●

वासुदेव, बड़नगर

प्रश्न—आपने अभी तक कितनी पुस्तकें लिखी हैं ? उन पुस्तकों में सर्वप्रथम पुस्तक कौन-सी है?

उत्तर—मैंने कोई पुस्तक नहीं लिखी, परन्तु अखबारों में कई लेख लिखे थे। वे लेख अब पुस्तकाकार छपे हैं। पुस्तक का नाम है 'इन माई व्यू'। इसका हिन्दी अनुवाद 'मेरी दृष्टि में' नामसे हुआ है।

किशोरकुमार, पद्मपुर

प्रश्न—मेरी आयु सोलह वर्ष की है। मैं मैट्रिक पास हूं। मेरी इच्छा सरकारी जासूस बनने की है। कृपया बताएं कि इसके लिए कितनी योग्यता होनी चाहिए तथा मैं कहां सम्पर्क स्थापित करूं ?

उत्तर—पुलिस के जासूसी विभाग से सम्पर्क करना ठीक होगा।

नरेश, पटना

प्रश्न—एक अमरीकी डालर कितने भारतीय रुपयों के बराबर है ? मैं किस प्रकार कैलिफोरनिया से अपने लिए पुस्तक मंगवा सकता हूं ?

उत्तर—एक डालर भारत के साढ़े सात रुपयों के बराबर होता है। जब इसे बैंक के पास से लेना होता है, तब १ फी सदी खर्च के लिए ज्यादा देना होता है। रिजर्व बैंक या कन्ट्रोलर से अनुमति लेकर भी पुस्तक मंगवा सकते हैं। इसके लिए सरलता से अनुमति मिल जाएगी।

सुभाष, कुरुक्षेत्र

प्रश्न—सरकार छात्रों के उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने पर इतने प्रतिबंध क्यों लगाती है, जबकि नेता और मंत्रीगण प्रायः विदेश यात्रा पर जाते रहते हैं। उनकी यात्रा पर क्या विदेशी मुद्रा खर्च नहीं होती ?

उत्तर—छात्र अपने लाभ के लिए जाना चाहते हैं और मंत्रीगण देश के लाभ के लिए जाते हैं। अधिकतर वे उन राज्यों के मेहमान बनते हैं, इसलिए विदेशी मुद्रा बहुत कम खर्च होती है।

ज्ञान वार्त्ता

मोरारजी देसाई

अनिलकुमार, कटिहार

प्रश्न—गांधी जी का कथन था कि जो व्यक्ति कार्य नहीं करता, उसे खाने का कोई अधिकार नहीं है। तो बच्चों को भोजन देना कहां तक उचित है ?

उत्तर—जो व्यक्ति बालिग हैं और काम नहीं करते, उनके लिए ही गांधी जी ने यह कहा था। बच्चों का काम पढ़ने का है। उनकी देखभाल करने का काम उनके माता-पिता का है।

रीता, चण्डीगढ़

प्रश्न—भारत में इतने भिखारी क्यों हैं ?

उत्तर—हमारे यहां भिक्षा देना पुण्य माना गया है, इस कारण भिखारी कुछ ज्यादा हैं। वैसे गरीबी के कारण भी भिखारी अधिक हैं।

रविन्द्रसिंह, वाराणसी

प्रश्न—क्या कारण है कि हमारे देश में हर ओर और हर विभाग में भ्रष्टाचार फैलता ही जा रहा है ?

उत्तर—मेरी राय में यह बात कुछ ज्यादा और बढ़ाकर कही जाती है।

दिलीप, अजमेर

प्रश्न–आजकल मनुष्य दिन-पर-दिन आलसी क्यों होता जा रहा है?

उत्तर–यह कहना गलत है। इस देश में मनुष्य अब ज्यादा मेहनती बनते जा रहे हैं।

पंकजकुमार, इटारसी

प्रश्न–मतदाता को दल देखकर मत देना चाहिए या उम्मीदवार देखकर?

उत्तर–दल देखकर मत देना उचित होगा, क्योंकि राज्य का कार्य दलों की तरफ से ही चलाया जाता है।

प्रवीणकुमार, एटा

प्रश्न–इंटर पास करने के बाद कौन-सी नौकरी सबसे श्रेष्ठ है?

उत्तर–जो नौकरी मिल सके और जो तुम्हें पसन्द हो। मुझे मालूम नहीं था कि इंटर पास लड़के भी 'नंदन' में सवाल पूछते हैं।

रमेश राव, बड़नगर

प्रश्न–भारत में कितनी भाषाएं प्रचलित हैं?

उत्तर–संविधान में १५ भाषाओं को मान्यता दी गयी है। इसमें से संस्कृत प्रचलित नहीं है। बाकी सभी प्रचलित हैं।

सतीश, रायपुर

प्रश्न–कानून गवाही को ही मान्यता देता है, चाहे वह झूठ हो या सच। फिर उसके आधार पर न्याय करना कहां तक उचित है?

उत्तर–कानून झूठी गवाही को मान्यता नहीं देता। वह सही गवाही को ही मान्यता देता है, इसलिए सही गवाही पर आधारित न्याय उचित है।

नारायण, बर्नपुर

प्रश्न–सरकार भद्दी और अश्लील फिल्मों को छूट क्यों देती है?

उत्तर–सरकार जिसको भद्दी और अश्लील फिल्म समझती है, उसको छूट नहीं देती।

बलबीर, मदनगंज

प्रश्न–सुना है कि आप चाय कभी नहीं पीते और हर मंगलवार का उपवास करते हैं। क्या यह सच है?

उत्तर–मैं पचास साल से चाय नहीं पीता। अब मंगलवार को उपवास नहीं करता हूं, परन्तु रोज एक ही बार खाना खाता हूं।

अजीत, जोधपुर

प्रश्न–हर पिता यही चाहता है कि उसका बेटा चार अक्षर पढ़ जाए। पर आखिर वे चार अक्षर हैं कौन से?

उत्तर–'विद्यावान'।

दीवानसिंह, नैनीताल

प्रश्न–क्या पाकिस्तान की जल सेना, हमारी जल सेना से अधिक शक्तिशाली है?

उत्तर–नहीं।

रमेश, खरखोदा

प्रश्न–'दल बदल' और दिल बदल में कौन श्रेष्ठ है?

उत्तर–दोनों में से कोई श्रेष्ठ नहीं। दोनों नेष्ठ हैं। ●

बुखार : हमारा दोस्त

—डा० सुप्रिया कपूर

बहुत पहले की बात है। एक जगह बहुत-से आदमी गप-शप कर रहे थे। अचानक एक आदमी को कुछ कंपकंपी हुई और वह 'हाय, हाय' करता हुआ जमीन पर पड़ गया। यह देखकर वहां एकत्र सारे लोग घबरा उठे।

तभी एक राहगीर उधर से गुजरा। उसने जमीन पर पड़े व्यक्ति की नब्ज देखी और बोला—"इसे बुखार है!"

बुखार! लोगों में खलबली मच गयी। न जाने यह कौन-सी बला है। सब घबरा उठे। खैर, यह तो एक जमाने की बात है। आज भी बहुत-से लोग बुखार के नाम से चिंतित हो उठते हैं। इसका एकमात्र कारण यही है कि वे ज्वर के बारे में एकदम अनजान होते हैं।

बुखार क्या है ?

हमारे शरीर में एक निश्चित माप तक गरमी बनी रहती है। जब भी यह गरमी अपने निश्चित या सामान्य माप से बढ़ती है, हमें ज्वर हो आता है। डाक्टरों ने इस सामान्य ताप का माप ९८.४ डिगरी फारेन हाईट निश्चित कर रखा है। यानी जब भी हमारे शरीर का ताप ९८.४ डिगरी के माप से ऊपर जाता है, हम बीमार पड़ जाते हैं। वैसे प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक प्रकृति के अनुसार यह ताप घटता-बढ़ता रहता है। किसी-किसी में तो यह ताप ९९.४ के माप तक भी सामान्य होता है। पर आखिर यह ताप है क्या ?

ताप क्यों बढ़ जाता है ?

हमारे शरीर में निरंतर रक्त-प्रवाह से और हमारे खाने-पीने से गरमी बनती है। जब हम स्वस्थ रहते हैं तो हमारा ताप सामान्य बना रहता है। ताप बढ़ने का मुख्य कारण हमारे शरीर में रक्त-संचार की गति का तेज हो जाना है। ताप बढ़ने के और भी कई कारण हैं। खाने-पीने और मेदा में गड़बड़ी होने के कारण भी ज्वर आ जाता है। कुछ बीमारियां भी ज्वर का कारण बनती हैं। घाव होने या जलने से हमारे खून में बीमारियों के अस्वास्थ्यकर कीटाणु प्रवेश कर जाते हैं। इसके अलावा बहुत-सी ऐसी औषधियां भी हैं, जिनके लेने पर ताप बढ़ जाता है।

एक शरारती शत्रु

ताप इतना शरारती है कि यह चैन से नहीं बैठता। शरीर की नस-नस थका डालता है। ज्वर के आते ही कंपकंपी के दौरे पड़ने लगते हैं। हम ठंड महसूस करते हैं और दांत किटकिटाते हैं। एक अजीब बात यह है कि कंपकंपी से अंदरूनी गरमी और भी बढ़ती है, अतः ताप या 'टेम्प्रेचर' भी बढ़ता है। अधिक तेज बुखार में व्यक्ति की भूख मारी जाती है। कमजोरी होने के साथ-साथ पेट में भी गड़बड़ी होती है।

ताप से लाभ

ताप बढ़ने से एक बात और मालूम हो जाती है और वह यह कि हमारे शरीर का भीतरी संतुलन बिगड़ गया है। हम भोजन करते हैं। इससे हमें गरमी भी प्राप्त होती है। जब यह गरमी बढ़ जाती है, तब ताप भी बढ़ने लगता है। जब यह गरमी अपने बनने के अनुपात में शरीर से बाहर निकलती रहती है, तब तक

ताप भी सामान्य बना रहता है। अधिक ताप होने से एक लाभ यह होता है कि हमारे खून का संचरण तेज और सही होने लगता है। इससे रक्त की शुद्धि भी हो जाती है और रक्त में अधिक सफेद सेल बनने लगते हैं। यह बैक्टीरिया आदि से हमारी रक्षा करते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि क्या अधिक ताप खतरनाक होता है? डाक्टरों का कहना है कि अधिक ताप हमेशा ही खतरनाक नहीं होता। टेम्प्रेचर के माप पर बीमारी की गंभीरता को आंकना भी सरासर गलत है। फिर भी अधिक ताप की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। किसी अच्छे डाक्टर से अवश्य ही जांच करवा लेनी चाहिए। सौ डिग्री का ताप अगर बराबर बना रहे, तो भी लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। वैसे इसका परिणाम और प्रभाव व्यक्ति की उम्र और बुखार के दबाव पर अधिक निर्भर है। १०३ डिग्री के ताप का दिमाग पर हलका असर पड़ने लगता है। इतने ताप के रोगी को बेचैनी के साथ भ्रांति भी होने लगती है। कमजोर दिमाग वालों को डिलिरियम तक हो सकता है।

वयस्कों को यदि १०६ डिग्री का ताप कुछ घंटे रह जाए, तो उनके मस्तिष्क को भयंकर और घातक क्षति पहुंच सकती है! ताप १०९ डिग्री तक पहुंच सकता है, जिसे बहुत कम रोगी सहन कर सकते हैं।

अन्त में हम बुखार कम करने के कुछ उपाय बताते हैं। इसके लिए रोगी का ताप बहुत सावधानी से लेने की जरूरत है। बुखार कम करने के लिए सबसे पहले आवश्यक है कि रोगी पानी खूब पिये। इससे पसीना खूब बनेगा और शरीर ठंडा रखने में सहायता मिलेगी। रोगी का कमरा स्वच्छ और खुला हो। उसे पूरे आराम और शांति की जरूरत होती है। विटामिन, प्रोटीन तथा कैल्शियम वाले खाद्य खूब खाने चाहिए। मामूली बुखार में एस्पिरीन या दूसरी गोलियां ली जा सकती हैं, लेकिन खाली पेट नहीं।

बुखार तेज या कम हो तो रोगी को रजाई या कम्बल में कसकर लपेटना नहीं चाहिए, क्योंकि उसके अन्दर तो पहले ही काफी गरमी बन रही है। जो भी हो, बुखार की अवहेलना मत कीजिए, डाक्टर की सलाह लीजिए। ●

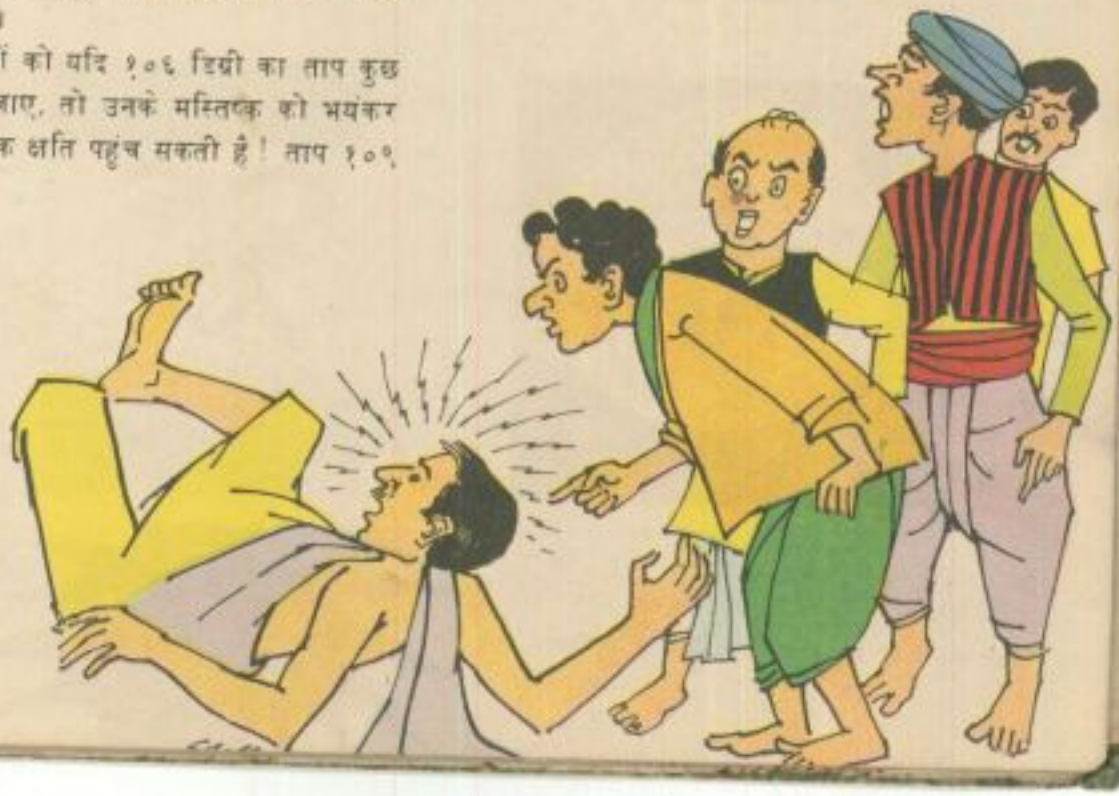

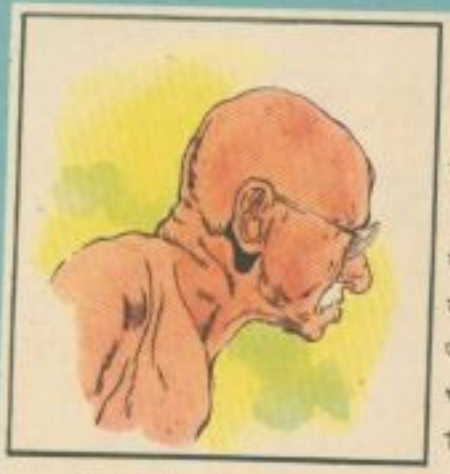

दो अक्तूबर १८६९-पोरबंदर में गांधी जी जनमे । वे जीवन भर सत्य और न्याय के लिए लड़े ।

उन्होंने अफ्रीका में बसे भारतीयों पर हुए भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठायी। यह सत्याग्रह का आरंभ था ।

गांधी जी के कार्यों से सारी दुनिया झुक गयी । भारत वापस आकर उन्होंने आजादी की लड़ाई में भाग लिया ।

स्वदेशी आन्दोलन नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आन्दोलन के साथ गांधी ने समाज-सुधार का काम भी किया ।

जेल और यातनाएं, उपवास, भूख हड़ताल.....।

गांधी जी झुके नहीं । अन्त में अंग्रेज-हुकूमत को झुकना पड़ा । किन्तु भारत के दो टुकड़े हुए....

और नोआखाली....। गांधी जी के पहुंचते ही सबके हथियार झुक गये । गांधी जी ने लोगों को एकता का पाठ पढ़ाया ।

लेकिन एक दिन प्रार्थना सभा में.....
हाय राम । हम कैसे झेलें अपनी आंखों सबका शोक
गया हमारे ही पापों से, अपना राष्ट्रपिता परलोक ।

बाल पुस्तकालय
पु०सं० ...
बिजनौर

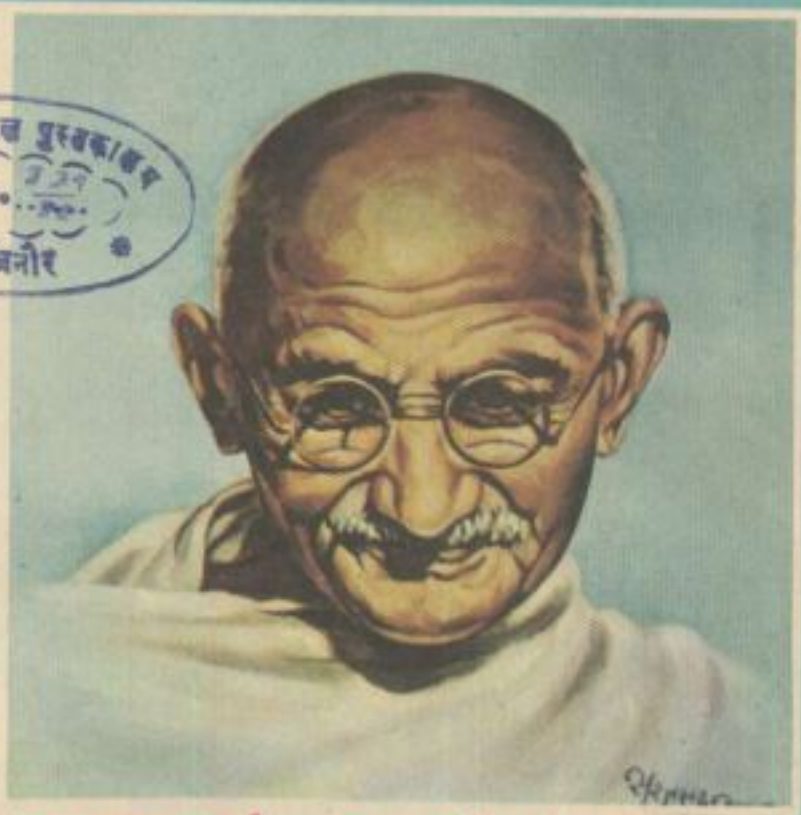

बापू को – बच्चों के प्रणाम

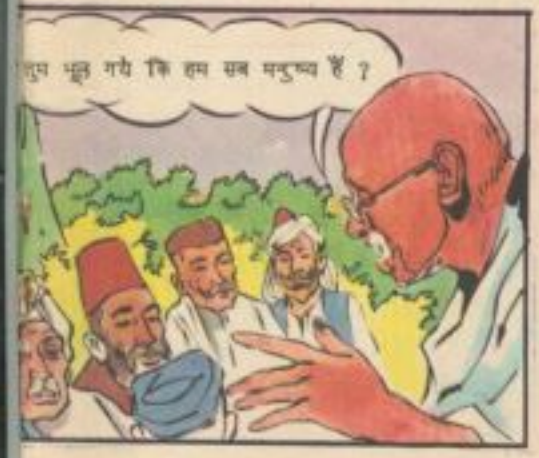

की कहानी

अजनबी संदूक

—वर्षा दास

बरसों पहले की बात है। एक करोड़पति व्यापारी ने अपनी सारी सम्पत्ति एकलौते पुत्र को दे दी और स्वयं संन्यासी जीवन व्यतीत करने निकल पड़ा। उधर सम्पत्ति पाकर करोड़पति के बेटे की आदतें बिगड़ गयीं। वह अपने दोस्तों के हाथ मनमाना पैसा लुटाने लगा। दोस्तों ने उसका असली नाम बदलकर 'करोड़पति' रख दिया।

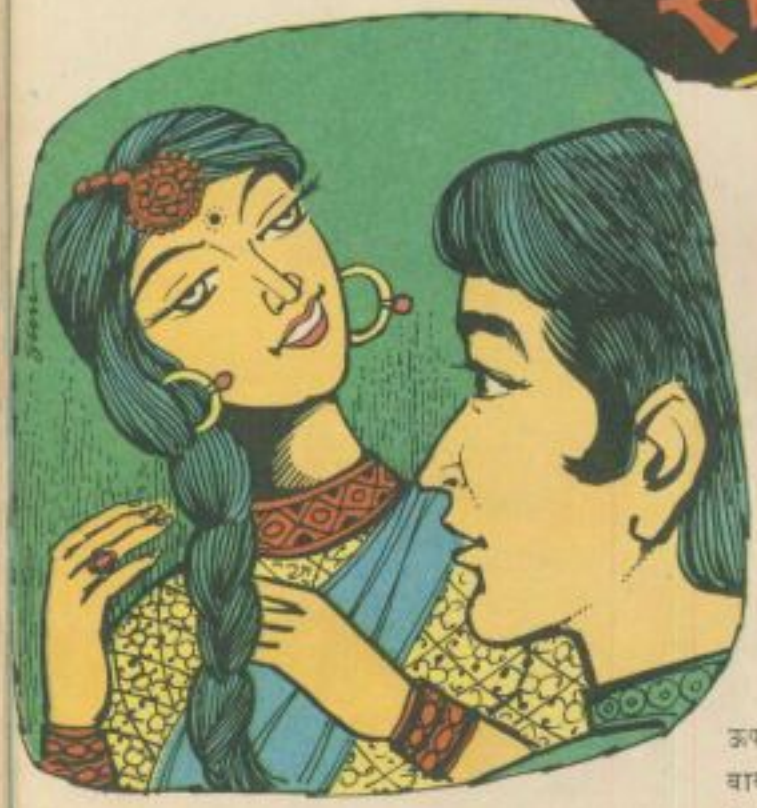

इससे शान में आकर वह लड़का और भी खर्च करने लगा। कुछ ही दिनों में वह कंगाल हो गया। पैसा गया तो उसके सारे दोस्त भी चले गये। इतनी बड़ी दुनिया में वह फिर अकेला रह गया। एक दिन वह पुरानी जिन्दगी की याद में खोया सिर धुन रहा था कि उसके एक दोस्त ने उसे एक संदूक भेजा। उसके साथ में एक चिट्ठी भी थी। उसमें लिखा था—'संदूक को थपथपाओ और उसमें बैठकर चल पड़ो।' करोड़पति अपनी स्थिति पर बहुत दुखी था। पहले तो उसने सोचा, किसी ने उसके साथ मजाक किया है, पर यह सोचकर कि परीक्षा करने में क्या हर्ज है, वह संदूक में बैठ गया।

वह एक अजनबी संदूक था। उसका ढक्कन बंद कर जरा-सा थपथपा देने पर हवा में उड़ने लगता था... फुर र र र्र—! करोड़पति ने संदूक में बैठते ही उसे जरा-सा थपथपाया। अब क्या था! मकानों से ऊपर, पेड़ों से, पहाड़ों से ऊपर और यहां तक कि बादलों से भी ऊपर... संदूक उड़ता ही गया। जब उड़ते-उड़ते करोड़पति का जी ऊब गया तो उसने धरती पर उतरने का विचार किया। एक सुनसान जगह देखकर वह धरती पर उतर आया। उसने संदूक को जंगल में छिपा दिया और स्वयं शहर की ओर चल पड़ा। चलते-चलते उसे एक अद्भुत महल दिखायी दिया।

महल के पास एक बहुत ऊंची मीनार थी। मीनार में खिड़कियां दिखायी दे रही थीं। करोड़पति ने राह चलते एक व्यक्ति को रोक-कर पूछा—"भाई यह किसका महल है?"

उस व्यक्ति ने कहा—"यह महल राजा का है और पास बनी मीनार में उसकी बेटी रहती है।"

करोड़पति के मन में एक योजना सूझी। उसने उसे धन्यवाद दिया और जंगल की ओर दौड़ पड़ा। वहां पहुंचकर वह संदूक में बैठ गया। अगले पल उड़कर वह मीनार की खिड़की के पास था। खिड़की से करोड़पति भीतर चला गया। वहां राजकुमारी पलंग पर लेटी हुई थी। उसने कुछ आवाज सुनी तो चमककर उठ खड़ी हुई। इसी समय करोड़पति हंसता हुआ उसके सामने आया। उसे देखकर राजकुमारी डरी, पर राजकुमारी को देखते ही करोड़पति उस पर मोहित हो गया। उसने निश्चय किया कि विवाह करूंगा तो इसी से नहीं,तो किसी से नहीं!

तभी राजकुमारी ने कांपते स्वरों में पूछा—"आप कौन हैं? यहां किसलिए आये हैं?" करोड़पति बोला—"मैं फरिश्ता हूं। बादलों के पार आसमान में रहता हूं और तुम्हें इस कैद से छुड़ाने के लिए आया हूं। यदि तुम मुझसे विवाह करोगी तो न केवल इससे छूटोगी वरन आसमान की सैर भी कर सकोगी।"

राजकुमारी पर करोड़पति के बातों का बड़ा असर पड़ा। वह भी इस तरह के एकान्त जीवन से तंग आ गयी थी। उसने करोड़पति से कहा—"यह तो मेरा बड़ा सौभाग्य होगा, पर बिना माता-पिता की अनुमति के आपसे विवाह करना उचित न होगा। वे प्रति रविवार को मेरे साथ नाश्ता करते हैं। उसी समय आप भी आ जाएं। मेरी माता को हंसाने वाली कहानियां बहुत अच्छी लगती हैं और पिता जी को उपदेश भरी कहानियां बहुत भाती हैं।"

करोड़पति ने कहा—"ठीक है, मैं रविवार को आ जाऊंगा। कहानियां सुनाकर उन्हें खुश कर दूंगा और तुम्हें ब्याह कर ले जाऊंगा।" फिर करोड़पति खिड़की के रास्ते उड़ गया।

राजकुमारी बहुत खुश हुई। वह बड़ी आतुरता से अगले रविवार की राह देखने लगी।

अगला रविवार भी आ पहुंचा। उस दिन करोड़पति बिलकुल सबेरे ही राजकुमारी के कमरे में पहुंच गया। जब राजकुमारी के माता-पिता आये तो एक अजनबी युवक को महल में बैठे देखकर आश्चर्य में पड़ गये। करोड़पति ने मुसकराते हुए उन्हें अपना परिचय दिया तो प्रसन्नता से खिल उठे। उन्होंने सोचा, जो व्यक्ति इतने पहरेदारों को पारकर इतनी ऊंचाई पर रहस्यमय ढंग से आया है, वह अवश्य फरिश्ता ही होगा। उन्होंने खड़े होकर उसका स्वागत किया। फिर भोजन के लिए निमंत्रण दिया। भोजन के समय करोड़पति ने रानी को एक कहानी सुनायी। उसे सुनकर रानी खूब हंसी। इतना हंसी की राजा को डर लगा कि कहीं वह पागल तो नहीं हो गयी। उसके बाद करोड़पति ने राजा को तरह-तरह के उपदेशों से भरपूर एक कहानी सुनायी। उसे सुनकर राजा 'वाह, वाह' कह उठे। उन्होंने करोड़पति से कहा—

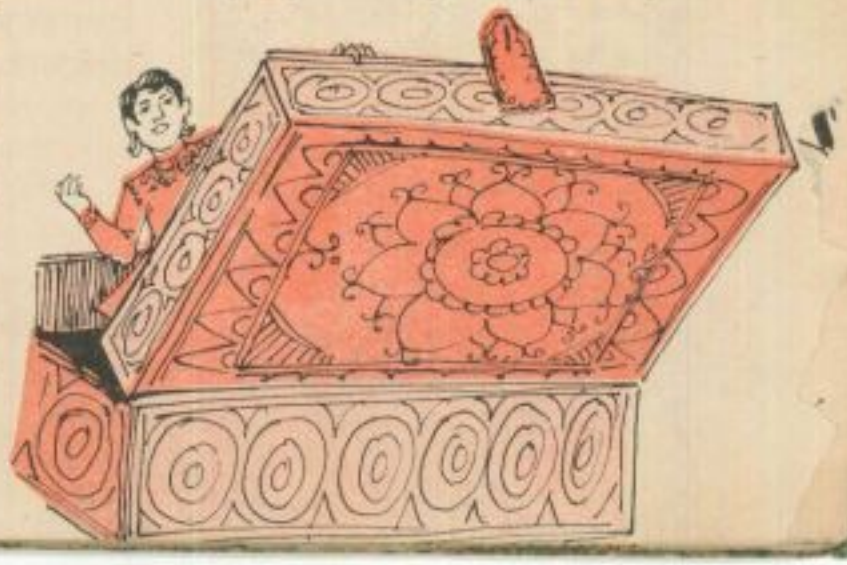

"हम तुमसे बहुत खुश हैं। हम चाहते हैं कि आज रात को ही तुम हमारी बेटी से विवाह कर लो।" फिर राजा ने उसी समय मंत्री को खबर भिजवायी कि राजकुमारी के विवाह की तैयारियां शुरू कर दी जाएं।

करोड़पति खुशी से फूला न समाया। भोजन के बाद वह अपनी संदूक में बैठकर अपने नगर जा पहुंचा। वहां एक जगह संदूक छिपाकर वह बाजार में गया। बाजार में उसने तरह-तरह के बहुत सारे पटाखे खरीदे और राजकुमारी के देश की ओर चल पड़ा। वहां पहुंचते-पहुंचते उसे रात हो गयी। जब राजकुमारी के महल के ऊपर पहुंचा तो उसने देखा राजा अपने मंत्रियों खड़ा-खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।

वह कृष्ण पक्ष की रात थी। आसमान में भयानक अंधकार छाया हुआ था, पर नीचे धरती पर राजकुमारी का महल और राजा का किला किसी नयी-नवेली दुलहिन की तरह सजा हुआ था।

करोड़पति ने देखा, राजकुमारी भी व्याकुल होकर आकाश की ओर ताक रही है। अब उसने ज्यादा देर करना ठीक न समझा। उसने संदूक में एक ओर रखे पटाके उठाकर जलाना शुरू कर दिया। कभी वह अनार उड़ाता और कभी बारूद की चकरी फिराता। आसमान में रंग-बिरंगे तारे उड़ते हुए देखकर सारे लोग अपने अपने घरों से बाहर निकल आये। राजा भी अप ने मंत्रियों, दरबारियों और सम्बंधियों के साथ यह खेल देखने लगा।

करोड़पति लगभग एक घंटे तक आतिशबाजी का तमाशा दिखाता रहा। जब उसके पास कुछ ही पटाखे बचे तो उन्हें उड़ाते हुए नीचे आने लगा।

सहसा करोड़पति की असावधानी से पेटी में रखे पटाखे जल उठे और उनके जलते ही एक भयानक विस्फोट के साथ पेटी के टुकड़े-टुकड़े हो गये। करोड़पति भी जल गया और नीचे गिरने लगा। नीचे धरती पर खड़े लोगों ने इसे भी एक तमाशा समझा। उधर इतनी ऊंचाई से नीचे गिरने के कारण करोड़पति का अन्त हो गया। जो दूसरों को धोखा देता है, वह स्वयं गड्ढे में जा गिरता है। ●

नवम्बर अंक लोक कथा अंक

कुछ विशिष्ट आकर्षण

○ **हरदौल** : जिस पर भाई ने संदेह किया और जिसे अपनी भाभी के हाथों जहर का प्याला पीना पड़ा। बुन्देलखंड में प्रचलित लोकप्रिय आख्यान का सरल रूप।

○ **करामाती लाकेट** : वह लाकेट था या अपार शक्ति का खजाना। उसे पाने के लिए जाने कितने षडयन्त्र रचे गये, कितने लोगों को मौत के घाट उतारा गया। इस अंक में शुभा वर्मा का एक अत्यन्त रोमांचकारी उपन्यास।

○ **चांद की रंगीन कहानियां** : चांद के सम्बंध में प्रचलित कुछ अनूठी लोक-कथाएं।

कुछ कहानियां

○ आम माता ○ लालमुनिया की दोस्ती ○ करामात एक दरजी की ○ सिर चढ़ा पाप ○ हौआ-हौआ लौवा-लौवा ○ दो क्षणों का नर्क ○ नामों का चक्कर और ढेर सारी लोक-कथाएं।

www.kissekahani.com

सुनहरे अक्षर

—स्नेह लता

विक्रमपुर नगर में एक राजा रहता था। उसके दो पुत्र थे। ऐश्वर्यचंद्र और ज्ञानचंद्र। दोनों भाई एक ही गुरु के यहां शिक्षा ग्रहण करते थे। उनका लालन-पालन ऐश्वर्य और वैभव के बीच हुआ था।

कुछ दिनों बाद राजा की मृत्यु हो गयी। बड़ा होने के कारण ऐश्वर्यचंद्र राजगद्दी का अधिकारी हुआ और ज्ञानचंद्र राजकुमार का राजकुमार ही रह गया। ज्ञानचंद्र ने सोचा—'हम दोनों भाई एक ही पिता के पुत्र थे। हमने एक ही गुरु से शिक्षा ग्रहण की, फिर भी मैं मात्र राजकुमार रहा और मेरा भाई राजगद्दी का अधिकारी हो गया। ज्ञान और बुद्धि में भी मैं अपने भाई से कम नहीं हूं। मुझे भी अपने ज्ञान का प्रयोग कर उपयुक्त स्थान प्राप्त करना ही चाहिए।' यह विचार आते ही वह राजदरबार से निकलकर अपने घोड़े पर सवार हो जंगल की ओर चल पड़ा।

जंगल में घूमते-फिरते उसे एक कुटिया दिखायी दी। कुटिया में एक महात्मा को देखकर वह अन्दर चला गया। महात्मा जी ने कुशल-समाचार पूछते हुए कहा—"राजकुमार, जंगलवासी योगी तुम्हें क्या दे सकता है? मेरे पास तो सिर्फ तीन उपदेश हैं। इन्हें साथ लेते जाओ, जीवन में काम आएंगे।' फिर महात्मा जी ने उसे तीन उपदेश बतलाये। पहला उपदेश था—परदेश में आश्रम के अतिरिक्त अन्यत्र वास न करना। दूसरा उपदेश था—राजतिलक वाले दिन सोना नहीं और अंतिम उपदेश था—बिना विचारे कोई काम न करना।

इन तीनों उपदेशों को याद कर राजकुमार ने महात्मा जी को दण्डवत् प्रणाम किया और आगे की राह ली।

एक दिन संध्या के समय राजकुमार एक शहर के निकट पहुंचा। वहां पेड़ों की छाया तले अन्य बारह राही भी आराम कर रहे थे। उसने भी उन बारह यात्रियों के साथ रात्रि व्यतीत करने का निश्चय किया। जैसे ही वह सोने लगा, अचानक उसे महात्मा जी का पहला उपदेश याद आ गया—परदेश में आश्रम के अतिरिक्त कहीं वास न करना। यह उपदेश याद आते ही राजकुमार आश्रम की तलाश में शहर की तरफ बढ़ा।

उसे आश्रम की खोज में कहीं दूर नहीं जाना पड़ा। कुछ ही दूर एक मंदिर था। उस मंदिर के पुजारी ने राजकुमार को उच्चकुल का समझकर उसे बड़े आदर के साथ वहां रात्रि व्यतीत करने को कहा।

संयोग से उसी रात उस देश के राजा के महल में चोरी हो गयी। सिपाहियों ने पेड़ों के नीचे सोये बारह यात्रियों को चोर समझकर पकड़ लिया। शीघ्र ही यह खबर सारे शहर में फैल गयी। राजकुमार ने जब यह समाचार सुना तो उसे एक बार फिर महात्मा जी का पहला उपदेश याद आ गया।

राजकुमार वहां से आगे बढ़ा। चलते-चलते एक दिन वह किसी राज्य की राजधानी में पहुंच गया। सांझ पड़ रही थी। रात होने में ज्यादा देर नहीं थी। वह सोचने लगा—'कहां रात गुजारूं? क्या करूं?

चिन्ताओं में उलझा हुआ राजकुमार एक सड़क पर चलता जा रहा था। अचानक उसने सामने वाले घर से बहुत से स्त्री-पुरुषों को निकलते देखा। वे सभी विलाप कर रहे थे। उसका मन पसीज उठा। वह स्थिति को समझने के लिए वहां पहुंचा। एक अजनबी को घर में घुसते देख, घर के मालिक ने पूछा—"तुम कौन हो? घर में क्यों घुसते आ रहे हो?"

"मैं परदेशी हूं। कहीं रात बिताने के लिए ठौर ढूंढ़ रहा था, परन्तु राह में आप लोगों को रोते-बिलखते देखकर यहां चला आया।" राजकुमार की संवेदना भरी बातें सुनकर घर के मालिक ने उसे आदरपूर्वक बैठाया और कहा—"युवक, किसी परदेशी का घर में आना हमारा सौभाग्य है। जहां तक हो सका हम आपका अतिथि सत्कार करेंगे। वैसे तो हम स्वयं विपदा में पड़े हैं।"

राजकुमार ने पूछा—"क्या आप मुझे अपनी विपदा बतलाएंगे।" घर के मालिक ने दुखी स्वरों में उसे बतलाया—"इस देश का दुर्भाग्य है कि यहां जो भी राज-सिंहासन पर बैठता है, एक ही रात में उसका देहान्त हो जाता है। इसी कारण राजगद्दी बराबर खाली पड़ी रहती है। कोई-न-कोई राजा तो चाहिए ही, अतः राज्य भर के परिवारों में से एक-न-एक दिन कोई सदस्य राजा बनता है। राजा क्या बनता है, काल का ग्रास बनने को विवश होता है। दुर्भाग्य से आज हमारे परिवार की बारी है। इस घर से कौन जाए? हम दोनों वृद्धों को राजा नहीं बनाया जाएगा। इसी कारण मुझे अपने इकलौते पुत्र को भेजना पड़ रहा है। हमारे रोने का कारण यही है।"

राजकुमार ने कहा—"आप चिन्ता न करें। आपके पुत्र को नहीं जाना पड़ेगा। उसके बदले में चला जाता हूं।"

उसकी यह बात सुनकर बूढ़ा प्रसन्न हो गया। उसने बड़े आदर-सत्कार के साथ उसे भरपेट भोजन करवाया। अभी राजकुमार भोजन करके उठा ही था कि राज-दरबार से मंत्री और कुछ दरबारी वहां आ पहुंचे। उनके साथ राजकुमार ज्ञानचंद्र दरबार में चला गया। पूरे विधि-विधान के साथ उसका राजतिलक हुआ। राजतिलक के बाद अपने मंत्री और सभासदों से विदा लेकर राजा ज्ञानचंद्र सोने के लिए राजमहल में पहुंचा।

राह में ज्ञानचंद्र को महात्मा जी का तीसरा उपदेश याद हो आया—राज-तिलक वाले दिन नहीं सोना। वह विचार करने लगा—'महात्मा जी के उपदेशों ने पहले भी मेरा हित ही किया है। आज भी उन्हीं के उपदेश का पालन करना चाहिए।' उसे रात भर नींद न आये, इस विचार से ज्ञानचंद्र ने अपनी तलवार निकाली और जांघ का कुछ मांस काट डाला। पीड़ा के कारण उसे नींद नहीं आयी।

ज्ञानचंद्र हाथ में नंगी तलवार लेकर राजमहल के अन्दर टहलने लगा। आधी रात बीत चुकी थी। सहसा उसे उद्यान की तरफ से किसी सर्प के फुंफकारने की आवाज सुनायी पड़ी।

ज्ञानचंद्र ने खिड़की से फुलवारी की तरफ झांका। एक भयंकर सर्प फन काढ़े राजमहल की तरफ जीभ लपलपाता बढ़ा आ रहा था। ज्ञानचंद्र सावधान हो गया। सर्प बड़ा जहरीला था। उसकी फुंफकार की गरमी के कारण ज्ञानचंद्र को नींद आने लगी। परन्तु घाव की पीड़ा के कारण वह जागता रहा। कुछ देर बाद ज्योंहीं खिड़की के रास्ते सर्प ने राजमहल में घुसना चाहा, ज्ञानचंद्र ने तलवार से उसके दो टुकड़े कर दिये।

दूसरे दिन सुबह सदैव की भांति नौकर राजा की लाश लेने राजमहल में आये। ज्ञानचंद्र को

जीवित पाकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। अनेक लोगों की जान बची देखकर प्रजा भी बहुत प्रसन्न हुई।

ज्ञानचंद्र को सुखपूर्वक राज्य करते हुए अनेक वर्ष बीत गये। उसका मंत्री दुष्ट स्वभाव का था। एक दिन उसने ज्ञानचंद्र के नाई को उसकी हत्या करने के लिए तैयार किया।

ज्ञानचंद्र अभी तक महात्मा जी के अंतिम उपदेश को नहीं भूला था। दो उपदेशों की सत्यता को तो वह जांच चुका था। अब केवल अंतिम उपदेश को जांचना था। तीसरे उपदेश को राजा ने सुनहरी अक्षरों में लिखवाकर अपने राजमहल में टंगवा दिया।

एक दिन नाई राजा की दाढ़ी बनाने आया। पहले उसने एक विषवाला उस्तरा निकाला, पर मारे भय के उसके हाथ कांपने लगे। तभी उसकी नजर उस तख्ती पर पड़ी, जिस पर महात्मा जी का उपदेश सुनहरी अक्षरों में लिखा था—बिना विचारे काम कोई न करना। नाई ने सोचा, अवश्य ही यह कोई अमूल्य उपदेश होगा, जिसे स्वयं राजा ने अपने राजमहल में अंकित करवा रखा है। अतः मुझे भी बिना विचारे कुछ नहीं करना चाहिए।

नाई के मन की दुविधा राजा से भी छिपी न रही। वह चौकन्ना हो गया। कुछ सोचकर राजा ने नाई का हाथ पकड़ लिया और उससे सभी बात सच-सच बतलाने को कहा। नाई घबरा गया और उसने सारा वृत्तान्त राजा को कह सुनाया।

ज्ञानचंद्र ने तत्काल मंत्री को पकड़ बुलवाया और प्राण-दण्ड की सजा दी। उसने नाई को बहुत-सा धन देकर देश-निकाला दे दिया। ●

कोलगेट से सांस की दुर्गंध रोकिये और दंत-क्षय का दिनभर प्रतिकार कीजिये !

क्यों कि: एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेंटल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंत-क्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है, और कोलगेट-विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का...अधिक दंत-क्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह बेमिसाल घटना है। केवल कोलगेट के पास यह प्रमाण है।

इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है—इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेंटल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

आप को यदि पाउडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पाउडर से भी वे सभी लाभ मिलेंगे—एक डिब्बा महीनों चलता है।

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए...
दुनिया में अधिक लोगों को दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही पसंद है।

अब !
सुपर साइज़ खरीदिये
... पैसा बचाइये !

DC G 38 HN

दो छोटी कहानियां

अपरिचित अपराध

—आराधक

जयपुर के राजमहल के एक भाग में कुछ राजगीर दीवार चुन रहे थे। उनमें से अधिकांश धीरे-धीरे काम कर रहे थे, किन्तु एक राजगीर बड़ी तल्लीनता से अपने काम में लगा था। वह एक-एक ईंट जमाता और उस पर प्लास्टर चढ़ाता जाता। वह अपने काम में ऐसा खोया कि कहां क्या हो रहा है, इसका भी उसे कुछ ध्यान नहीं था। वह एक दरवाजे पर बैठा ईंट की सीधाई एक धागे से नाप रहा था। एकाएक उसका पांव नीचे किसी कोमल वस्तु से टकराया। वह चौंक पड़ा। उसने नीचे देखा, महाराजा रामसिंह दरवाजे के नीचे से जा रहे थे। राजगीर को ध्यान आया कि उसका पांव महाराजा के मस्तक से छू गया था। किसी अपरिचित भय से वह कांप उठा।

राजगीर की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? भय के कारण उसके हाथ से हथौड़ी छूट गयी और भयभीत-सा वह अपने घर चला आया।

पत्नी और घर वालों ने उसका भयभीत चेहरा देखकर कारण पूछा, तो उसने केवल इतना ही कहा—"मुझे कल क्या सजा मिलेगी, भगवान ही जाने? महाराज के मस्तक से मेरा पांव छू गया है।" यह सुनकर घर वाले घबरा गये। वे जानते थे कि इस अपराध की सजा मृत्यु-दंड ही है।

इस घटना के दूसरे दिन भी राजमहल में काम हो रहा था। दूसरे राजगीर काम कर रहे थे, किन्तु कल वाले राजगीर का स्थान खाली था। महाराजा पुनः उधर से निकले। उन्होंने दरवाजे की तरफ दृष्टि डालकर पूछा—"वह जो कल यहां काम कर रहा था, कहां है?"

कुछ देर सन्नाटा रहा। फिर उन राजगीरों में से एक वृद्ध राजगीर ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की—"अन्नदाता, उससे भयंकर अपराध हुआ है। कल से वह भय से बेहोश पड़ा है।"

"कल उसे मेरे सामने हाजिर किया जाए।" —महाराजा ने आज्ञा दी और चले गये।

राजगीर को जाना पड़ा। महाराजा की आज्ञा जो थी। महाराजा के सामने राजगीर उपस्थित हुआ। उसे लग रहा था जैसे कुछ ही क्षणों में उसका सिर गरदन से अलग होने वाला है।

महाराजा ने उसकी ओर देखा फिर आज्ञा दी—"इसे दो सौ रुपये इनाम दिये जाएं। एक पगड़ी और एक दुशाला भी भेंट किया जाए।" एक क्षण ठहरकर उन्होंने पूछा—"कितनी मजदूरी मिलती है तुम्हें प्रतिदिन?"

"आठ आने, अन्नदाता!"—उसने कांपती आवाज में कहा।

—"आज से तुम्हें प्रतिदिन एक रुपया मिलेगा। मैं तुम्हारे काम से बहुत ही खुश हुआ हूं।"

सभी लोग अवाक् थे। सजा के बदले इनाम। राजगीर की आंखों में शोक के बदले हर्ष के आंसू उमड़ आये।

राजमहल के द्वार पर उसके परिवार के लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वह बाहर निकला तो किसी ने पूछा—"क्या सजा मिली?" राजगीर अपने हर्ष के आंसू नहीं रोक सका। उसने अटकते हुए कहा—"दो सौ रुपये इनाम। तीस रुपये वेतन। लगन से काम करने की यह सजा कम नहीं है।" ●

मेल-जोल

—म० न० नरहरि

रामू, सोहन, मोहन, जग्गू और काले घनिष्ठ मित्र थे। पांचों मिल-जुलकर अपना कार्य करते थे। गांव के लोग उन्हें पंचू भाई कहते थे। रामू बांसुरी बहुत अच्छी बजाता था। काले ढोलक अच्छी बजाता था। बाकी तीनों मिलकर गाते थे।

एक दिन ये पंचू भाई लकड़ी काटने जंगल में गये। काले, सोहन, मोहन और जग्गू जब लकड़ी काटकर वापस लौटे तब तक रामू वापस नहीं लौटा था। वे सब रामू को ढूंढ़ने चल पड़े।

जंगल में काफी अन्दर जाने के बाद उन्हें एक जगह रामू घायल पड़ा हुआ दिखा। सामने की झाड़ी में एक भालू बैठा हुआ था। सोहन ने अपनी कुल्हाड़ी संभाली। काले, मोहन और जग्गू ने भी अपनी-अपनी कुल्हाड़ियां संभाली फिर वे तीनों उस भालू को घेरते हुए आगे बढ़े। कुल्हाड़ी की मार से उन्होंने भालू का काम तमाम कर दिया। उस दिन के बाद सबने निश्चय किया कि वह पांचों एक साथ ही रहा करेंगे।

एक दिन शाम को मौसम सुहावना था। उस दिन उनको मजदूरी भी अच्छी मिली थी। रामू बांसुरी बजाने की उमंग में था और काले ढोलक। देखते-देखते सोहन, मोहन और जग्गू ने भी गाना शुरू कर दिया। तभी अचानक मूसलाधार वर्षा शुरू हो गयी।

पांचों भय से कांप उठे और अपनी झोपड़ी में दुबककर बैठ गये। बिजली बार-बार जोर से कड़क रही थी। हर बार ऐसा लगता था कि वह झोपड़ी पर गिरकर ही रहेगी। तभी जग्गू को एक उपाय सूझा। वह बोला—"मुझे ऐसा लगता है जैसे यह बिजली हममें से किसी एक की भेंट लेना चाहती है।" फिर सबने मिलकर तय किया कि एक आदमी के कारण हम चारों भी मार जाएंगे। क्यों न हम एक-एक करके झोपड़ी से बाहर जाकर खड़े हो जाएं। जिस पर बिजली गिरनी होगी, गिर जाएगी। रामू ने कहा—"ठीक है, सबसे पहले मैं बाहर जाकर खड़ा होऊंगा।"

रामू झोपड़ी से बाहर आकर खड़ा हो गया। बिजली जोर से कड़की और रामू के पास से होती हुई निकल गयी। फिर इसी तरह से मोहन, सोहन और काले के पास से भी बिजली कड़ककर निकल गयी। अब जग्गू शेष बचा था। जग्गू ने उन चारों से कहा—"अब मेरी मृत्यु निश्चित है। यदि तुम लोग चाहो तो मेरी जान बचा सकते हो। क्योंकि, जब तक मैं तुम लोगों के साथ हूं, तब तक बिजली मुझे नहीं मार सकती।" चारों ने एक स्वर में कहा—"जब हम बारी-बारी से बाहर जाकर खड़े हुए, उस समय तुमने हमारा साथ नहीं दिया। अब तुम्हारे कारण हम खतरा मोल नहीं लेना चाहते।" इतना कहकर चारों ने जग्गू को झोपड़ी से बाहर ढकेल दिया। जग्गू के झोपड़ी से बाहर आते ही बहुत जोर से बिजली कड़की। जग्गू ने भय के मारे आंखें मूद लीं। कड़क खतम हो जाने के बाद जब जग्गू ने अपनी आंखें खोली तो वह आश्चर्यचकित रह गया। बिजली झोपड़ी पर ही गिरी थी और उसके अन्दर वे चारों मृत पड़े थे। जग्गू मन-ही-मन सोचने लगा—'अब तक शायद मेरे कारण ही ये चारों जीवित थे।' ●

तेनालीराम
(२३)

एक दिन राजा कृष्णदेव राय और तेनालीराम बाग में घूम रहे थे। टहलते-टहलते राजा कृष्णदेव राय ने तेनालीराम से कहा —"सुना है कि तुम बड़े मनहूस हो गये हो। जो सबेरे-सबेरे तुम्हें देख लेता है, उसे भोजन भी नहीं नसीब होता।"

दूसरे दिन बिल्कुल सबेरे-सबेरे राजा हथेलियों से अपना मुंह ढांपे तेनालीराम को जगाने जा पहुंचे। तेनालीराम ने महाराजा को देखकर नमस्कार किया। थोड़ी देर बाद राजा वहां से चले गये। जाते-जाते वे तेनालीराम को अपने साथ शिकार पर चलने का निमंत्रण भी दे गये।

तेनालीराम सिर झुकाकर खड़ा हो गया। यह देख राजा ने पूछा —"सफाई में कुछ कहना चाहते हो?" तेनालीराम ने बड़ी गंभीरता से उत्तर दिया—"महाराज, मैं भला क्या कह सकता हूं। हां, सोच रहा हूं कि मुझसे भी ज्यादा मनहूस लोग मजे से चैन की बंसी बजाते हैं, पर मैं हूं कि फांसी पर लटकाया जा रहा हूं।"

तेनालीराम ने कहा—"महाराज, गुस्ताखी माफ हो। मुझसे तो ज्यादा मनहूस आप हैं। आपने मेरी सूरत देखी तो आपको भोजन नहीं नसीब हुआ और मैंने आपकी सूरत देखी तो मुझे फांसी पर चढ़ना पड़ रहा है।"

फिर उन्होंने कहा—"आज रात तुम्हें महल में ही रहना पड़ेगा। हम स्वयं इस बात की परीक्षा करेंगे।"

उस दिन जंगल में राजा को बहुत परेशानी उठानी पड़ी। भोजन तक नहीं नसीब हुआ। वे तेनालीराम पर बरस पड़े—"आज तुम्हारा मुंह देखा तो भोजन भी नसीब न हुआ। अच्छा हो कि तुम जैसे मनहूस व्यक्ति को संसार से ही विदा कर दिया जाए। अब राजधानी लौटते ही तुम्हें फांसी पर लटका दिया जाएगा।"

राजा को थोड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा—"तुमसे भी मनहूस कौन है? उसका नाम क्या है?"

राजा निरुत्तर हो गये। यह देखकर तेनालीराम ने आगे कहा— "महाराज, कोई व्यक्ति मनहूस नहीं होता। मनहूस तो वे विचार होते हैं, जो मनुष्य को इस तरह भाग्यवादी बनाते हैं।" ●

चित्र : प्रेम कपूर

वह आवाज

—विष्णु प्रभाकर—

मंटू जब स्कूल से लौटा तो वह बहुत थका-थका-सा था। घर के दरवाजे में प्रवेश करते ही वह अपनी मां को मुसकराते हुए पाता था। आज उसकी मां वहां नहीं थी। वह अन्दर घुसा चला आया। उसने अपने कमरे में जाकर बस्ता पटका और मां की तलाश में निकल पड़ा। उसका जी कर रहा था कि वह झपटकर मां के गले से लिपट जाए और रोना मुंह बनाकर उसे डांट पिलाये—"आज तुम दरवाजे पर क्यों नहीं मिलीं? मुझे जोरों की भूख लग रही है।"

भूख की याद आते ही उसे लगा कि जैसे वह सचमुच ही भूखा है। रोज ऐसा होता था। स्कूल से आने पर मां उसे खाने के लिए दे देती थी, लेकिन आज तो सब कुछ उलट-पलट हो गया। आखिर बात क्या है? मां कहां गयी?

सोचता-सोचता वह रसोई के पास वाले कमरे में जा पहुंचा। वहीं बैठकर वे लोग खाना खाया करते थे। वे लोग बहुत अमीर नहीं थे। उनके घर में बढ़िया-सी खाने की मेज भी नहीं थी, लेकिन फिर भी जिस दिन किसी का खाना होता, उस दिन दो-तीन छोटी-छोटी मेजें जोड़कर उन पर चादर बिछा दी जाती थी और खाना लगा दिया जाता था।

अचरज से मंटू ने देखा कि आज भी सब कुछ उसी तरह लगा हुआ है। जरूर कोई खाने पर आने वाला होगा? तब तो बड़ा अच्छा, बढ़िया-बढ़िया चीजें खाने को मिलेंगी। यह सोचते-सोचते उसकी निगाह मेज पर गयी। उस पर सजा था खाने का सामान—सेब, चीकू, सन्तरे, रसगुल्ले, दालभीजी इत्यादि-इत्यादि।

उसने सोचा, मां जरूर रसोई घर में समोसे बना रही होगी। हां, रामू भी दिखायी नहीं

देता। वह जरूर बाजार गया होगा। पिता जी शायद अभी तक दफतर से नहीं आये। वे मेहमान को लेकर आएंगे। वे हमेशा ही ऐसा करते हैं, पर पम्मी अभी तक क्यों नहीं आयी? जरूर उसके स्कूल में आज कोई खास बात है।

उसे लगा जैसे वह अकेला है। आसपास कोई नहीं है। सामने फल और मिठाई देखकर उसके पेट में जोर-जोर से चूहे कूदने लगे।

तभी उसने सुना, जैसे कोई उसका नाम लेकर धीरे से पुकार रहा है—"मंटू!"

मंटू चौंक पड़ा। उसने एकदम घूमकर पीछे की ओर देखा, लेकिन वहां तो कोई भी नहीं था।

तब तक वह मेज के बिलकुल पास आ पहुंचा। अब वह सब कुछ भूल गया। उसने हाथ बढ़ाकर एक चीकू उठाया। एक रसगुल्ला लिया और इधर-उधर देखकर उसने दोनों चीजें खायीं। लेकिन बार-बार उसे ऐसा लगता रहा जैसे किसी ने उसका नाम लेकर पुकारा है—"मंटू, तुमने ठीक काम नहीं किया। यह चोरी है। तुमने मां से नहीं पूछा।"

इतने में चीखती-चिल्लाती उसकी बड़ी बहन पम्मी भी वहां आ पहुंची। उसने तेजी से अपना बस्ता पटका और बोली—"अरे, मंटू भइया! जानते हो आज हमारे स्कूल में क्या हुआ?" मंटू ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। वह अपने में खोया रहा। पम्मी ने यह देखकर पूछा—"अरे, मंटू भइया! तुम ऐसे उदास क्यों बैठे हो? मम्मी कहां हैं?"

मंटू तलखी से बोला—"मैंने मम्मी को नहीं देखा।"

पम्मी बोली—"तो आओ, हम देखते हैं। आज अशोक चाचा चाय पर आने वाले हैं। वे उन्हीं के लिए समोसे बना रही होंगी।"

यह कहती हुई पम्मी रसोई की ओर भागी। मंटू उसके पीछे-पीछे चला।

मां रसोई घर में नहीं थीं। दोनों बच्चे निराश होकर लौट ही रहे थे, तभी उन्होंने मां को आते हुए देखा। वे मुसकरायीं और बोलीं—"मुझे जरा देर हो गयी। आज तुम्हारे अशोक चाचा आ रहे हैं। उनको हमारे मुहल्ले की बरफी बहुत अच्छी लगती है। वही लेने गयी थी। अच्छा, आओ, कपड़े बदलो, हाथ-मुंह धोओ। मैं तुम्हारा नाश्ता तैयार करती हूं।

दोनों बच्चे तैयार होने के लिए चले गये। पम्मी जोर-जोर से कहानी पर कहानी सुनाती रही, लेकिन मंटू बराबर कुछ सोच रहा था। इसका परिणाम यह हुआ कि उसने अपने कपड़े बजाय खूंटी पर टांगने के एक कोने में फेंक दिये। हाथ-मुंह धोते समय दो बार लोटा उसके हाथ से छूटकर गिरा।

मंटू बराबर उदास बना रहा। चाय की मेज पर अशोक चाचा ने उसे खुश करने के लिए कई बार गीत सुनाया, किन्तु वह हंसा नहीं। उस रात उसने एक सपना देखा—चीकू और रसगुल्ला उसके पेट में कूद रहे हैं और कह रहे हैं—"मंटू, तुमने हमें अपनी मम्मी से बिना पूछे खाया था। तुमने ठीक काम नहीं किया।"

वह सबेरे सोकर उठा, किन्तु सदा की तरह वह प्रसन्न नहीं था। उस दिन उसने स्कूल का काम भी मम्मी से ही कराया। स्कूल में सबसे

पहला पीरियड गणित का था। आज उसके सारे सवाल ठीक थे। अध्यापक ने प्रसन्न होकर उसकी पीठ थपथपायी और कहा—"मंटू, तुम होशियार होते जा रहे हो। इसी तरह मेहनत करोगे तो क्लास में फर्स्ट आओगे।"

मंटू ने अध्यापक की बातें सुनीं। वह चुप रहा। उसे लगा जैसे किसी ने फिर पुकारा है—"मंटू, तुमने फिर गलत काम किया।"

मंटू चौंक पड़ा। लेकिन जितना ही वह चौंकता, आवाज उतना ही तेज होती। उसने साफ-साफ सुना। आवाज कह रही थी—"मंटू, तुमने ठीक काम नहीं किया। सवाल तुमने अपने आप नहीं किये हैं। अपनी मम्मी से कराये हैं।"

मंटू ने सोचा—'आखिर यह आवाज कहां से आती है? क्या मेरे अन्दर से आती है? क्या रात के सपने की तरह सवाल भी मेरे पेट में बैठे हुए बोल रहे हैं?'

मंटू को लगा जैसे उसे पसीना आ रहा है। वह मशीन की तरह अपनी सीट से उठा और अध्यापक की मेज के पास आ गया। वह धीरे से बोला—"सर, मैं आपको एक बात बताना भूल गया था।"

अध्यापक ने पूछा—"क्या बात?"

मंटू ने धीरे से कहा—"सर, ये सवाल मैंने नहीं, मेरी मम्मी ने किये थे।"

अध्यापक ने मंटू को ऊपर-से-नीचे तक देखा। फिर उसकी आंखों में झांका और मुसकराकर बोले—"तो क्या हुआ! आज तुमने अपनी मम्मी से पूछ कर किये हैं, तो कल अपने आप कर लोगे। मुझे खुशी है कि तुमने मुझे सच बात बता दी।"

मंटू को लगा जैसे एक ही क्षण में सब-कुछ पलट गया है। वह बिलकुल हल्का हो गया है। मास्टर जी जो कुछ पढ़ा रहे हैं, वह सब उसे बहुत अच्छी तरह समझ आ रहा है। उसे बहुत खुशी हुई। वह दिन भर स्कूल में बहुत प्रसन्न रहा, लेकिन बीच-बीच में मिठाई की बात उसे याद आती रही।

छुट्टी मिलने पर वह सदा की तरह भागता हुआ घर आया। देखा, मां दरवाजे पर खड़ी मुसकरा रही है। वह उसके गले से चिपट गया। मंटू बोला—"मम्मी, मम्मी, मैं तुम्हें एक बात बताना भूल गया था। कल जब मैं घर आया था तो तुम मुझे यहां नहीं मिली थीं। मुझे बड़ी भूख लग रही थी। तुमसे बिना पूछे मैंने एक रसगुल्ला और एक चीकू उठाकर खा लिया।"

मम्मी एक क्षण को गंभीर हुईं, फिर मुसकरा कर बोलीं—"तो कल तुमने चोरी की थी, लेकिन कोई बात नहीं। देर से ही सही, तुमने मुझे बता दिया। अब फिर तुम ऐसा नहीं करोगे। आओ, कपड़े बदलो। मैं तुम्हारे लिए नाश्ता लगाती हूं। लेकिन, हां बेटे, तुम्हें अपना अपराध स्वीकार करने के लिए किसने कहा?"

मंटू ठिठका फिर बोला—"पता नहीं मम्मी! तब से बराबर कोई मुझसे कहे जा रहा है—'मंटू तुमने गलती की है।' असल में मम्मी, वह चीकू और रसगुल्ला मेरे पेट में बैठे-बैठे बोल रहे हैं। सपने में मैंने उन्हें ही देखा था।"

मम्मी का चेहरा खिल उठा वह बोलीं—"मंटू, यह तुम्हारी अपनी ही आवाज है। जब कोई बुरा काम करता है तो यह आवाज तुरन्त उसे चेता देती है।"

मंटू बोला—"मम्मी, मैंने अध्यापक से भी कह दिया था कि आज ये सवाल मेरी मम्मी ने किये हैं, मैंने नहीं। वे बहुत खुश हुए।"

यह सुनते ही दोनों हाथ आगे बढ़ाकर मम्मी ने मंटू को अपनी छाती में भर लिया। फिर उसके गालों को बार-बार चूमती हुई बोली—"तुम बहुत अच्छे बच्चे हो, बहुत ही भोले और सच्चे।" ●

गमलों में गुलाब उगाइए --२

--स्वदेश कुमार

चित्र नं. १

अगर गरमी कम हो जाए तो अगस्त से लेकर फरवरी के अन्त तक जब चाहें तब गमलों में गुलाब के पौधे लगाये जा सकते हैं।

लेकिन पूरे वर्ष भर इनकी देखभाल करनी जरूरी है, खास तौर से बीमारियों की रोकथाम और इलाज। वैसे तो गुलाब की टहनियों, पत्तों, कलियों और फूलों में कई तरह की बीमारियां लग सकती हैं, लेकिन यहां हम उन्हीं बीमारियों के बारे में बताएंगे, जो आमतौर पर ज्यादा होती हैं। कीटाणुनाशक दवाओं से इनका इलाज किया जाता है। यह दवा सांस के साथ नाक में नहीं जानी चाहिए। इसलिए पौधों पर दवाओं को छिड़कते समय नाक पर रूमाल बांध लेना चाहिए और हवा जब न चले, तभी इनका प्रयोग करना चाहिए।

पौधे को अगर कोई बीमारी लग गयी है, तो उसकी बढ़ोत्तरी रुक जाएगी। पत्ते तुड़े-मुड़े, कटे हुए, बदरंग, चकत्तेदार हो जाएंगे। कलियां खिलेंगी नहीं। फूल छोटे हो जाएंगे।

पहले तो रोकथाम जरूरी है। इसलिए पौधा लगाने के पंद्रहवें दिन से हर महीने 'रोगर' या 'बासुडीन' नामक तरल कीटाणुनाशक दवा छिड़कते रहना चाहिए। तुम्हारे पास पिलट छिड़कने का छोटा स्प्रे तो होगा ही। उसमें पानी भरकर इनमें से किसी भी दवा की चार-पांच बूंद डालकर पौधे पर स्प्रे कर दो। स्प्रे शाम को करना चाहिए और दो दिन पौधे को पानी से नहीं धोना चाहिए।

बीमारियां और इलाज

अब कुछ बीमारियों का इलाज भी बता दें।

(१) मिलड्यू : यह बीमारी फरवरी से अप्रैल तक हो सकती है। यह खतरनाक है और बड़ी जल्दी फैलती है। पत्तों और कलियों पर सफेद पाउडर जैसी तह जम जाती है। पत्तियां ऊपर को मुड़ जाती हैं। इलाज यह है : आधा छोटा चम्मच 'कोसीन' या 'मोरिस्टन' नामक पाउडर लेकर पहले एक कटोरा पानी में खूब अच्छी तरह चम्मच से चला-चलाकर घोल लो। फिर एक गिलास पानी डालकर उसे पतला कर लो। पिलट वाले स्प्रे में भरकर पत्तों, कलियों और टहनियों पर अच्छी तरह छिड़काव करो। जब तक बीमारी दूर न हो जाए, यह क्रिया हर चौथे दिन करते रहो। इस बीच पौधे को पानी से मत धोओ।

- वाटर कलर्स
- पोस्टर कलर्स
- ऑईल कलर्स
- वाटरप्रूफ ड्राईंग इंक
- पोस्टर पेपर्स
- ऑइल पेस्टेल्स
- वैक्स क्रेयान्स
- सेबल और हॉग के बाल का ब्रश
- मार्कर
- स्केचिंग पेन

कॅम्लिन प्राइवेट लिमिटेड
कुर्ला-अंधेरी रोड,
जे. बी. नगर, बम्बई ५९ ए. एस.

कैमल
आर्ट सामग्री

राजू ने प्रथम पुरस्कार जीता !

उसने अपना चित्र कैमल रंग से बनाया था।
कितना उज्वल, बिल्कुल कुदरती रंग जैसा।
वे अच्छी तरह मिल जाते हैं और बहुत दिनों तक चलते हैं।

PRATIBHA 693HIN

माताओं के लिये खुशी का सन्देश

अब अपने बच्चे को
नये तथा अद्वितीय फ़ार्मूले वाला
हमदर्द ग्राईप वाटर दीजिये

यह उन वस्तुओं से बनाया हुआ है जो परम्परा से सफ़ल सिद्ध हो चुकी हैं। यह नन्हें बच्चों के कष्ट और बेचैनी को दूर करता है और दांत निकलने के दिनों में विशेष-कर लाभदायक है।

हमदर्द
ग्राईप वाटर

बच्चों के लिये अच्छा — बहुत ही अच्छा

हमदर्द

HDC-1228 H

(२) ब्लैक स्पाट : पत्तियों पर काले धब्बे पड़ जाते हैं। अक्सर गरमियों में यह बीमारी होती है। इसके अलावा अगर तुम देखो कि पत्तियां तुड़-मुड़ गयी हैं या अदृश्य कीड़ों ने उन्हें काट दिया है, तब भी सबका एक ही इलाज है—'ब्लाइटौक्स' नामक तरल कीटाणुनाशक दवा का प्रयोग। फ्लिट के स्प्रे में पानी भरकर चार-पांच बूंद इस दवा को मिलाकर हर पंद्रहवें दिन स्प्रे करो।

(३) थ्रिप्स : फरवरी के बाद कलियों और फूलों के ऊपरी भाग पर काले-काले निशान दिखायी देते हैं। इसके लिए 'मेलाथियन' नामक तरल कीटाणुनाशक दवा की चार-पांच बूंद फ्लिट के स्प्रे के पानी में मिलाकर हर पंद्रहवें दिन स्प्रे करो।

(४) रेड स्केल : यह बीमारी ज्यादातर बरसात में होती है। टहनियों पर नीचे से शुरू होकर पौधे को मार देती है। टहनियों पर छोटे छोटे लाल-भूरे दाने बहुत पास-पास दिखायी देते हैं, जैसे बच्चों को खसरा निकल आती है। बरसात शुरू होने पर 'फोलीडोल' नामक तरल कीटाणुनाशक दवा चार-पांच बूंद फ्लिट के स्प्रे के पानी में मिलाकर खूब अच्छी तरह टहनियों पर छिड़क दो। अगर फिर भी बीमारी लग जाए, तो दवा की आठ बूंदें पानी में मिलाकर स्प्रे करो—सात-सात दिन बाद। कीड़े मरकर भी टहनियों में चिपके रहते हैं। दो बार स्प्रे करने के बाद पुराने टूथब्रुश से रगड़कर इन्हें हटा दो।

(५) डाई बैक : इस बीमारी का कोई इलाज नहीं। टहनी ऊपर से काली-पीली होकर नीचे तक होती जाएगी और सूख जाएगी। जैसे ही इसका असर दिखे, वहीं से टहनी काट दो।

ये सब कीटाणुनाशक दवाएं किसी भी अच्छी बागवानी का सामान बेचने वाली दूकान से मिल जाएंगी।

पौधों की कटाई-छंटाई

दो साल का होने पर पौधा तेजी से बढ़ना शुरू होता है। लेकिन तब हर साल १० से २५ अक्तूबर के बीच इनकी कटाई-छंटाई या प्रूनिंग करना बहुत जरूरी है।

पौधे की टहनियां इधर-उधर बढ़ जाती हैं। आपस में उलझ जाती हैं। कुछ पतली और कमजोर भी निकलती हैं। कुछ सूख जाती हैं। तीन-चार स्वस्थ टहनियों को छोड़कर, जो बड यूनियन से (जहां से टहनियां फूटती हैं) बाहर की तरफ को चल रही हों, बाकी सबको पूरा-का-पूरा काट दो। फिर इन तीन-चार स्वस्थ्य टहनियों को ऊपर से एक तिहाई काट दो। पत्ते भी सब काट दो। टहनी को जहां से काटना हो, वहां बाहर की तरफ को जो आंख दिखायी दे, उससे एक चौथाई इंच ऊपर टहनी के अन्दर की तरफ थोड़ा तिरछा काट दो।

गमलों की खाद-मिट्टी बदलना

प्रूनिंग करने के बाद पूरा पौधा गमले से लो। गमले को उलटा कर एक हाथ से पौधे को नीचे से पकड़ो और दूसरा से गमले के कगार को धीरे-धीरे जमीन पर मारो। मिट्टी समेत पौधा बाहर आ जाएगा। अब होशियारी से सब मिट्टी अलग कर दो। तुम देखोगे कि जड़ें बड़ी हो गयी हैं। बारीक जड़ों का नीचे गमले की पेंदी की तरह गुच्छा बन गया है। इस गुच्छे को प्रूनर से काट दो। मोटी जड़ों को आधा-आधा काट दो। टूटी जड़ भी काट दो। चित्र नं. १

अब पूरे पौधे को किसी बड़ी बालटी में पानी भरकर चौबीस घंटे तक डुबा दो।

बाद में पहले लेख में बताये गये तरीके से पौधे को गमले में लगा दो। आठ दिन तक छाया में रखो, फिर धूप में। जैसा पहले लेख में बताया था, उसी तरह रासायनिक खाद और पानी देते रहो। ●

१७

सम्पादक नंदन, नयी दिल्ली - १

पत्र-मित्र स्तम्भ

नाम _____ आयु _____

पूरा पता _____

_____

कूपन भेजने की अंतिम तिथि १५ अक्तूबर '६९

१. कु० मंजूला मुंदड़ा १२, मुंदड़ा गारडन, पो. झारसुगुड़ा, २. सुभाषचन्द्र मठरेगा १४, द्वारा श्री दीवानचन्द मठरेजा, आड़ती, खेमकरन (जिला अमृतसर), ३. अशोककुमार ओबराय १६, मकान नं. २१४२, महेन्द्र गंज, राजपुरा, ४. रेणुका कुमारी शाह १४,२२१६, कुचा कमाल बिन, मोतीबाजार, अमृतसर, ५. शरद शर्मा १४, प्रकाश टाकीज, मादान महल रोड, लखनऊ, ६. गिरजा बख्श सिंह १५, यू. पी. सैनिक स्कूल, सरोजिनी नगर, लखनऊ–५, ७. विजय चतुर्वेदी १४, डा. एस.एल. चतुर्वेदी, भादों की मथुरी, टिहरी गढ़वाल, ८. अनिलकुमार नागपाल ८,३।६८, संगत फतेहगढ़, जिला फर्रुखाबाद, ९. अनूपकुमार दीक्षित १४, १०४ए।१४८, रामबाग, कानपुर, १०. प्रेमशंकर मिश्रा १४,४८५, रामभवन, मम्फोर्ड गंज, सुभाष नगर, इलाहाबाद, ११. मनोहरलाल राठौर १४, श्री धनजी गोपाल राठौर, पो. बागबाहरा, जिला रायपुर, १२. शफीकुर्रहमान १५ द्वारा फजलरहमान, मकान नं. ३७०, नीमच, १३. कौशल्या देवी १३, १०८ए, कमला नगर, दिल्ली–७, १४. रामनिवास अग्रवाल १३, आर. पी. अग्रवाल, दु० नं० १६०, न्यू बाजार, देहरोड, (जिला- पूना), १५. प्रदीपकुमार नेवटिया ११, १४।३ कालू बाड़ा लेन, सलकिया, हवड़ा, १६. प्रसाद एच. गोयल १६, १७, श्यामाप्रसाद मुखर्जी रोड, कलकत्ता–२५, १७. बाबा सिंह जौहल १६, क. नं. के० एस ६२।७, पो. बर्नपुर बर्दवान, १८. प्रदीपकुमार तिवारी ९, ७ नम्बर, राधा बाजार, गौहाटी, १९. नरेन्द्रकुमार शर्मा १४, राजधर भवन, गढ़रपुरा रोड, धौलपुर, २०. ओमप्रकाश गर्ग १५, २००, विनोबा बस्ती, श्री गंगानगर, राजस्थान, २१. अजय जुल्का १४, ६१६, आदर्श नगर, जयपुर, राजस्थान, २२. शैलेन्द्रकुमार आनन्द १६, द्वारा एस. एन. आनन्द, रेलवे कोलोनी, नं.–४०८डी, आबूरोड, २३. स्वाति भटनागर १४, भटनागर-हाऊस, जिला–चित्तौड़गढ़, गिरीश, २४. वामोरकर ९, केशवपुर फ्रंट, तिलकनगर, नयी दिल्ली-१८, २५. अनिल भटनागर ११, २१।२३, मालरोड, दिल्ली–७, २६. रचना बधावन १२, १८, पोलो रोड, दिल्ली कैंट, २७. राकेश शिगंला १६, रोशन महल, पानीपत, करनाल, २८. अंजनी कुमार गुप्ता १२, १२६, चांदनी चौक, खड़गपुर, २९. अरविन्दकुमार गुरगुटिया १५, द्वारा रामकिशन दास, पो. करमायर, जिला-संथालपरगना, ३०. डी. पी. अग्रवाल १५, २३।२५७, जीवनी मंडी, आगरा–४, ३१. नीलाद्रीकुमार मिश्र १५, सदानंदपुर, बस्ता, बालाशर (उड़ीसा), ३२. महावीर प्रसाद १६, द्वारा—श्री कालूसिंह कोठारी किशनगढ़, ३३. विपिन मोंगा १४, विनयनगर, नयी दिल्ली, ३४. अशोककुमार सेठी १६, २४, जवाहर मार्ग, इंदौर, ३५. ओमप्रकाश बाजपेयी १५, एफ।३९, शांतिनगर, कानपुर, ३६. नरेन्द्रनारायण राय १२, पटेल नगर, आरा, ३७. शिवकुमार अग्रवाल १४, गढ़मुक्तेश्वर, मेरठ, ३८. अनूपकुमार साहा १०, माफ गंज, पटना, ●

गालिब शताब्दी के उपलक्ष्य में

बिल्कुल मुफ़्त

प्राप्त कीजिये

आप पोस्ट-कार्ड पर अपना नाम तथा पूरा पता लिखकर हमें भेज दें। हम तुरन्त ही आप की सेवा में गालिब के चुने हुए शेरों की अत्यन्त सुन्दर आफ़सेट पर छपी हुई दो रंगी पुस्तिका भेज देंगे और डाक-व्यय भी हम देंगे।

हिन्दी पॉकेट बुक्स प्रा. लि. द्वारा संचालित

घरेलू लाइब्रेरी योजना

(पुस्तक - कलब)

जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-32

बापू के पत्र

--भवानी प्रसाद मिश्र

← वह मकान जहां गांधी जी का जन्म हुआ था।

प्राइमरी स्कूल राजकोट— जहां गांधी जी ने प्रारंभिक शिक्षा पायी।

राजकोट का हाई स्कूल, जहां से गांधी जी ने भारत में अपनी शिक्षा पूरी की थी। इसीके बाद वे आगे पढ़ने लंदन गये।

गांधी जी के जीवन का हरेक क्षण देश की सेवा के लिए अर्पित था। जो बापू हरेक को प्रेम करते थे, वे बच्चों को प्रेम न करें, यह कैसे हो सकता है? उन्होंने देश-विदेश के अनेक बच्चों को पत्र लिखे थे। उन पत्रों के कुछ अंश ये हैं।

गांधी जी १९२७ में श्रीलंका की यात्रा पर गये थे। उन्होंने कैंडी नगर से बच्चों को लिखा:

"कैंडी शहर की प्राकृतिक सुन्दरता को देखते हुए मन नहीं थकता। ऐसे सुन्दर स्थान में घूमते हुए मैं मुग्ध हो गया हूं। सोचता हूं कि भगवान के बनाये हुए इन विशाल मंदिरों के होते हुए लोग लाखों-करोड़ों रुपये खर्च करके ईंट-पत्थरों के बड़े-बड़े मंदिर क्यों बनाते हैं? क्या इन मंदिरों ने सचमुच धर्म को बढ़ाया है। तुम लोग भी इस बात पर विचार करना और मुझे लिखकर भेजना है।"

गांधी जी बच्चों को निरा बच्चा नहीं मानते थे। वे बड़ी-बड़ी बातों में भी उनकी राय लेते थे।

एक छोटा-सा पत्र जो उन्होंने १९२९ में बम्बई के बच्चों को लिखा था:

"बम्बई में रहने और पढ़ने वाले बच्चों को यह याद रखना चाहिए कि हिन्दुस्तान के करोड़ों बच्चों को देखते हुए, वे एक बड़े विशाल समुद्र में बूंद के समान हैं। उन्हें यह भी याद रखना चाहिए कि इन करोड़ों बच्चों में एक बहुत बड़ी तादाद उन बच्चों की है, जो हड्डियों के ढांचे भर हैं। अगर बम्बई के बच्चे इन्हें अपने भाई-बहनों के समान ही मानते हैं, तो मैं पूछना चाहता हूं कि वे इनकी क्या मदद करने जा रहे हैं?" ●

पिता : करमचंद गांधी

गांधी ७ वर्ष की आयु में—

लंदन में विद्यार्थी गांधी

बैरिस्टर गांधी→

गांधी : बचपन और बड़प्पन

⊙ सत्याग्रह के लिए तत्पर गांधी

कस्तूरबा के साथ गांधी ←

विश्ववंद्य गांधी →

अंतिम दर्शन →

चित्र: अनन्त देसाई

कहानी लिखो : ५९

अंतिम तिथि १० अक्तूबर, १९६९

बायीं ओर एक चित्र छपा है। इस चित्र के आधार पर तुम एक कहानी लिख सकते हो। कहानी पांच सौ शब्दों से अधिक में नहीं होनी चाहिए।

नाम _____

पता _____

_____

कहानी-लिखो-५९
द्वारा- सम्पादक 'नंदन'
हिन्दुस्तानटाइम्स, नयी दिल्ली १

संतोष

विष्णु शर्मा

आलोक

अरुण

पुरस्कृत चित्र :
शकुन्तला ठाकर
१२०।५६३, शिवाजी नगर, कानपुर।

इनके भी प्रयास प्रशंसनीय थे : मंजु गोयल आगरा, रश्मि शर्मा गाजियाबाद, विश्वनाथ मिश्र लखीमपुर, अशोक शुक्ल सतना, विनीता कपूर मथुरा। अरुण राजनगर, आलोक नागपुर, काकुली सेन कलकत्ता, सुनील गुप्ता कानपुर, रेखा शर्मा नयी दिल्ली, सुरेश माने वर्धा और गुरुचरण सिंह लुधियाना।

'नंदन' ज्ञान-पहेली:११

अंतिम तिथि २० अक्तूबर, १९६९
इस समय तक प्राप्त सभी पूर्तियां स्वीकार की जाएंगी

नं.ज्ञा.प:११

यहां से फाड़िए • एक वर्ग का कुल ५० पैसे, दोनों वर्गों का १ रुपया

'नंदन' ज्ञान-पहेली-११

मैं 'नंदन' ज्ञान-पहेली प्रतियोगिता के सभी नियमों को स्वीकार करता। करती हूं और सम्पादक का निर्णय मेरे लिए अंतिम और कानूनी तौर पर मान्य होगा।

हस्ताक्षर——————

नाम ——————

पूरा पता——————

पोस्टल आर्डर का नम्बर——————

राशि ——————आयु——————

संकेत

बाएं से दाएं

(१) जिनको पैदा हुए सौ वर्ष हो गये।

(२) मारते समय मैं——रहा था। (हांप। कांप)

(४) यहां हाथ की——————कहां से आएं। (पूरियां। पूनियां)

(५) आपको फौरन——कुछ करना चाहिए। (जाकर। आकर)

'नंदन' ज्ञान-पहेली
द्वारा-सम्पादक 'नंदन'
हिन्दुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली-१

नं.ज्ञा.प:११

'नंदन' ज्ञान-पहेली-११

मैं 'नंदन' ज्ञान-पहेली प्रतियोगिता के सभी नियमों को स्वीकार करता। करती हूं और सम्पादक का निर्णय मेरे लिए अंतिम और कानूनी तौर पर मान्य होगा।

हस्ताक्षर——————

नाम ——————

पूरा पता——————

पोस्टल आर्डर का नम्बर——————

राशि ——————आयु——————

(६) मैं——————हो गया। (बेबात। बेताब)

(७) इसलिए यहां उन्हें नहीं——————। (गिनता। गिनाता)

(८) यहां मुझे कोई——————भी नहीं। (मानता। जानता)

(९) फिर भी दोनों——गये। (फूट। छूट)

(१०) सत्य एक——वृक्ष है। (विराट। विशाल)

(११) सबसे लम्बी पर्वत माला।

www.kissekahani.com

दम्भ की पराजय

—सुषमा भटनागर

"जी, हम अन्दर आ जाएं?"

और अध्यापिका की स्वीकृति पाकर अनुराधा कक्षा के भीतर आ गयी। कक्षा की सभी लड़कियों की दृष्टि इस नयी लड़की पर टिक गयीं। अध्यापिका के संकेत पर अनुराधा एक खाली कुरसी पर बैठ गयी। बैग रखकर उसने बायीं ओर निगाह डाली तो एक अपने जैसी ही गोल-मटोल लड़की को देखकर अनुराधा को बड़ा चैन मिला।

पीरियड खतम हुआ तो अनुराधा ने उस लड़की से उसका नाम पूछा। उस लड़की ने बतलाया कि उसका नाम सुजाता श्रीवास्तव है, और वह भी अभी-अभी स्कूल में भरती हुई है।

कुछ ही दिनों में सुजाता और अनुराधा की दोस्ती औरों के लिए उदाहरण बन गयी।

एक दिन सुजाता ने कहा—"अनु, कल मेरा जन्म दिन है। बहुत बड़ी पारटी होगी। तू भी अपने डैडी के साथ जरूर आना। आएगी न?"

अगले दिन अनुराधा के हठ पर उसके डैडी राजकुमार बाबू उसे लेकर सुजाता के घर चले। वहां शामियाना तना था। बड़ी भीड़ थी। द्वार पर सुजाता और उसके पिता प्रेमकुमार मेहमानों का झुक-झुककर स्वागत कर रहे थे।

राजकुमार बाबू जैसे ही द्वार पर पहुंचे, उन पर मानों पहाड़ टूट पड़ा। वे उसी दम अनुराधा को लिये लौट पड़े। सुजाता 'अनु-अनु' पुकारती ही रह गयी।

अपने पिता के व्यवहार पर विस्मित अनुराधा भी रो पड़ी। पर उसके पिता न माने। उन्होंने घर लौटकर ही दम लिया। वहां उन्होंने अपनी पत्नी को चुपके से बतला दिया कि सुजाता के पिता और कोई नहीं उनके अपने बड़े भाई हैं, जिन्होंने कुछ लोगों के कहने में आकर उन्हें घर से निकाल दिया था।

उधर सुजाता का दिल टूट गया था। वह बीमार पड़ गयी। बेहोशी में 'अनु-अनु' चिल्लाने लगी। डाक्टरों ने उसके पिता को बतलाया कि इसे उस बच्ची से न मिलवाया गया तो मामला और बिगड़ जाएगा।

सुजाता के पिता भी अपने छोटे भाई को पहचान गये थे। पर अपने दम्भ के कारण उससे नहीं मिल रहे थे। अन्त में ममता के आगे दम्भ की पराजय हुई। वे अपने छोटे भाई के द्वार पर जा पहुंचे। उन्होंने कांपते स्वरों में कहा—"राज, मेरे कर्मों की सजा सुजू को मत दो। भगवान के लिए बच्चियों को मिलने दो।"

अनायास ही राजकुमार बाबू के मुंह से निकल गया—"भाई साहब, सुजू आपकी बेटी ही नहीं मेरी भतीजी भी है। अनु को लेकर मैं अभी चलता हूं।" और अनु को देखते ही बीमार सुजाता के चेहरे पर रौनक दौड़ गयी। ●

पानीयन

आदर्श झाग वाला

सॉफ्ट ड्रिंक टेबलेट

(पाइन - एपल फ्लेवर)

एक ग्लास ठण्डे जल में एक टिकिया मधुर तथा तरोताजा पेय बनाता है।

पैकिंग

३० टैबलेट की फायल

बंगाल कैमिकल

कलकत्ता : बम्बई : कानपुर : दिल्ली

पुरस्कृत कथा

एक से तीन

—रमेशचन्द्र शर्मा

दिनेश नामका एक लड़का था। उसे चित्र बनाने का बहुत शौक था। सभी उसके चित्रों की बहुत प्रशंसा करते थे।

एक बार उसके शहर में चित्रों की एक प्रदर्शनी लगी। दिनेश भी अपने चित्र प्रदर्शनी में भेजना चाहता था, किन्तु दिनेश के पास नये चित्र नहीं थे। प्रदर्शनी में नियम था कि उसमें नये बनाये चित्र ही रखे जाएंगे।

शाम के छः बज चुके थे। सुबह से ही प्रदर्शनी शुरू होने वाली थी। दिनेश सोच में पड़ गया कि वह अब क्या करे? तभी उसका मित्र राजू उसके पास आया। दिनेश ने राजू को अपनी परेशानी बतायी।

कुछ सोचकर राजू बोला—"ठीक है, तुम्हें आज ही अपना चित्र बनाकर भेजना चाहिए। तुम कहीं एकान्त में बैठकर चित्र बनाओगे तो निश्चित ही तुम्हारा चित्र अच्छा बनेगा।"

—"तो फिर चित्र कहां बैठकर बनाया जाए?"

"बगीचे में, पीछे की ओर। वहां कोई देखेगा भी नहीं।" —राजू ने सुझाव दिया।

बगीचे में अंधेरा होने के कारण चित्र बनाना कठिन था। फिर दोनों ने सोचा कि घर से लैम्प उठाकर लाया जाए, किन्तु दिनेश इससे सहमत नहीं था। वह जानता था कि पिता जी को यह काम बिलकुल पसन्द नहीं, अगर उन्हें पता चल गया तो नाराज होंगे।

तभी राजू को एक उपाय सूझ पड़ा। उसने दिनेश से कहा—"तुम रंग और ब्रुश लाओ। मैं अपनी टार्च लेकर आता हूं। तुम चित्र बनाना। मैं तुम्हें रोशनी दिखाऊंगा। अगर तुम्हारे पिताजी की आहट हुई, तो मैं तुरन्त टार्च का बटन दबाकर उसे बंद कर दूंगा।"

दिनेश को राजू का यह सुझाव पसन्द आ गया। वह रंग और ब्रुश लेकर चित्र बनाने लगा।

जब वे दोनों चित्र बनाने में लगे थे, तब सुरेश भी वहां आ गया। उसने भी दिनेश की चित्र बनाने में मदद की। दिनेश चित्र बनाता गया। पहले उसने एक तोता बनाया, बाद में गहन जंगल बनाया। चित्र इतना अच्छा बना कि दूसरे दिन प्रदर्शनी में उसी चित्र को प्रथम पुरस्कार मिला। पुरस्कार पाकर दिनेश प्रसन्न था। उसने राजू और सुरेश को धन्यवाद दिया, क्योंकि एक से दो और दो से तीन मिलने पर ही यह कठिन काम पूरा हुआ था। ●

चित्र-प्रतियोगिता-२८

अंतिम तिथि १५ अक्तूबर, १९६९
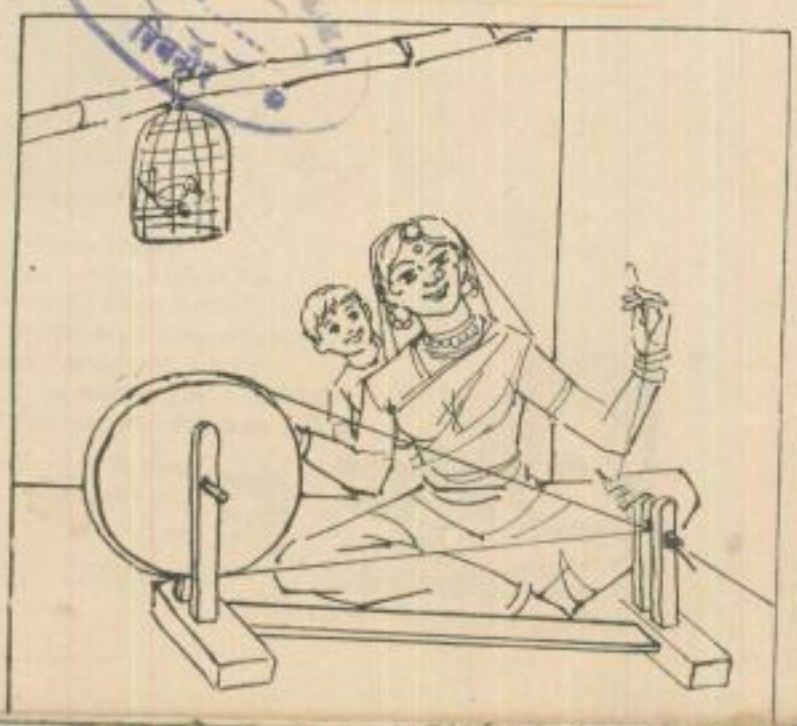
चित्र प्रतियोगिता-५८
द्वारा—सम्पादक 'नंदन'
हिन्दुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली-१